ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 37 कुल पृष्ठ-8 23 से 29 सितम्बर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 आ.कृ.-02

वसुधैव कुटुम्बकम् के उद्घोष को साकार करने के संकल्प के साथ

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का 83 वाँ जन्मदिवस संकल्प समारोह के रूप में सम्पन्न

स्वामी अग्निवेश जी ने विश्व पटल पर आर्य समाज की पहचान को प्रतिष्ठित किया

– स्वामी आर्यवेश

मानवता एवं विश्व शांति के पुरोधा थे स्वामी अग्निवेश

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी अग्निवेश जी विश्वविख्यात आर्य नेता थे

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी, बंधुआ मजदूरों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले, दबे कुचले लोगों की आवाज, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के 83वें जन्मोत्सव एवं विश्व शांति दिवस के अवसर पर 21 सितम्बर, 2021 को अग्निलोक आश्रम बहलपा, जिला गुरुग्राम में संकल्प समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैदिक विरक्त मंडल के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ के द्वारा किया गया। यज्ञ का संचालन स्वामी प्रणवानन्द जी के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञ के उपरांत कार्यक्रम का संचालन मंच से प्रारम्भ हुआ। ज्ञातव्य हो कि स्वामी अग्निवेश जी का जन्मदिवस प्रतिवर्ष किसी विशेष मुद्दे को लेकर मनाया जाता रहा है। इस वर्ष उनका जन्मदिन उनकी स्मृति में 'संकल्प समारोह' के रूप में मनाया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन प्रभावशाली ढंग से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में हुआ। मंच का संयोजन तेजस्वी युवा संन्यासी व मिशन आर्यावर्त चैनल के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया। स्वामी आदित्यवेश जी ने स्वामी अग्निवेश जी की अन्तिम दिनों में सेवा एवं सुश्रुषा में श्री अशोक वशिष्ठ व श्री धर्मेन्द्र जी के साथ पूरा समय बिताया था। उन्होंने बताया कि स्वामी जी अन्तिम श्वांस तक अपने आत्मबल के आधार पर मौत से भी जूझते रहे और हमें यह कहते रहे कि मैं इतना जल्दी जाने वाला नहीं हूँ, हमें अभी बहुत कुछ करना है जब तक गैर–बराबरी, सामाजिक अन्याय, शोषण, धार्मिक अन्धविश्वास तथा पाखण्ड आदि कुरीतियाँ समाप्त नहीं हो जातीं तब तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा। वे हमें भी उत्साहित करते रहते थे। किन्तु उन्होंने मन से कभी हार नहीं मानी यही एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा उनके जीवन से मुझे प्राप्त हुई। हर परिस्थिति में मनोबल को मजबूत रखना मैंने स्वामी जी से ही सीखा।

इस संकल्प समारोह की अध्यक्षता कर रहे वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने स्वामी अग्निवेश जी के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी एक विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे अपनी बात कहने के लिए जब खड़े होते थे तो श्रोतागण एकदम शान्त हो जाया करते थे। क्योंकि जब वे बोलते थे तो बीच में कहीं रूका नहीं करते थे, उनकी वाणी धाराप्रवाह थी। वे सदैव सत्य के लिए लड़ाई लड़ते थे उसके लिए उन्हें चाहे जो कुर्बानी देनी पड़े, परन्तु वे उससे पीछे नहीं हटते थे। स्वामी अग्निवेश जी ने वास्तव में स्वामी दयानन्द के सच्चे सिपाही के रूप में आजीवन कार्य किया तथा पूरे विश्व में आर्य समाज की दुंदुभी बजाई। स्वामी अग्निवेश जी पूरे विश्व में विख्यात थे। बेशक हमारे देश के लोग उन्हें नहीं पहचान पाये परन्तु विदेशों में उनकी पहचान एक सच्चे मानव एवं मानवता के पुजारी के रूप में की जाती है। इसके लिए उन्हें कई बड़ी–बड़ी संस्थाओं का अध्यक्ष बनाया गया एवं कई बड़े–बड़े सम्मानों से भी विभूषित किया गया। आज उनके 83वें जन्मदिन को हम सब संकल्प समारोह के रूप में मनाने के लिए यहाँ उपस्थित हुए हैं तो हमारा यह दायित्व बनता है कि हम सबको उनके जीवन एवं कार्यों से प्रेरणा लेकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए तथा उनके द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलते हुए गरीब, किसान, मजदूर, बेसहारा लोगों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने का मन बनाकर जाना चाहिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी अग्निवेश जी के जीवनवृत्त पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों को पूरे विश्व में प्रचारित तथा प्रसारित करने का प्रशंसनीय कार्य किया। स्वामी अग्निवेश जी एक गम्भीर, चिन्तनशील, आन्दोलनकारी एवं तेजस्वी आर्य संन्यासी थे उनका हिन्दी, अंग्रेजी एवं कई भाषाओं पर पूरा अधिकार था इसीलिए उन्होंने देश–विदेश में वैदिक सिद्धान्तों को प्रसारित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। चाहे किसान आन्दोलन हो, दलितोद्धार कार्यक्रम हो, बंधुआ मजदूरों की मुक्ति की लड़ाई हो, सती प्रथा विरोधी आन्दोलन हो, नाथद्वारा मंदिर में हरिजन प्रवेश का आन्दोलन हो, चाहे शराबबन्दी आन्दोलन हो और चाहे कन्या भ्रूण हत्या विरोधी आन्दोलन हो स्वामी अग्निवेश जी ने इन सभी आन्दोलनों के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। देश–विदेश के दबे, कुचले और अन्तिम व्यक्ति जिसकी कोई सुध नहीं लेता था उनके लिए स्वामी जी ने काम किया और उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ी। स्वामी अग्निवेश जी जाति, सम्प्रदाय, ऊँच–नीच आदि भेदभाव को छोड़कर गरीब,

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अग्नि विज्ञान– गुण एवं प्रभाव

– वेद प्रकाश गुप्ता

अग्नि का महत्व :– अग्नि एक व्यापक शब्द है। अग्नि जड़ होते हुए भी सृष्टिकारक एवं सृष्टि का प्रमुख एवं अभिन्न घटक है। यह सृजनकर्ता एवं विध्वशंक, दहन, भष्म करने वाली भी होती है जिसे हम अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन उपयोग करते, देखते एंव अनुभूति करते रहते हैं। पृथ्वी की कुल आवश्यक अग्नि यानी गर्मी का 90 प्रतिशत से अधिक भाग सूर्य से ही प्राप्त होता है। वायु का तापमान यानी सूर्य के अग्नि की आँच जरा सा भी कम या ज्यादा हो जाये तो हम सब बेहाल हो जाते हैं। हमारा होता हुआ कार्य बिगड़ जाता है। ब्रह्माण्ड में समस्त पदार्थ अविनाशी हैं अर्थात किसी भी पदार्थ का नाश नही होता है परतुं पदार्थों के गुण, व्यवहार एवं अवस्थाएँ बदल सकती हैं। दो या कई पदार्थ मिलकर यानी रसायनिक क्रिया कर के, एक या कई अन्य गुणों, व्यवहार एवं अवस्थाओं आदि के पदार्थों के साथ अग्नि, ध्वनि, प्रकाश आदि के रुप में उर्जा बनाते हैं। समस्त अग्नियाँ, बिजली, प्रकाश, ध्वनि, बल आदि उर्जा यानी शक्ति के रुप एवं स्रोत हैं। इन्हें एक–दूसरे शक्ति के रूपों में परिवर्तित किया जा सकता है। बिजली से हम प्रकाश, ध्वनि, गर्मी आदि पाते हैं एवं कल कारखाने चलाते हैं। अग्नियों से बिजली बनाते हैं जिससे कल कारखाने चलाते हैं एवं घर में भोजन पकाते हैं। यदि हमें जल को गर्म करना है तो हम उसे बिजली अथवा अग्नि से गर्म कर सकते हैं। बल भी शक्ति यानी ऊर्जा का एक स्वरूप है। हम अपने पैरों से साइकिल के पैडल पर बल लगाकर साइकिल के पहिए को घुमाकर ही गतिमान होते हैं एवं रात में डाइनमों द्वारा बिजली बनाकर बल्ब को जलाकर प्रकाश कर रास्ते को देखते हैं। सोलर पैनल के द्वारा हम सूर्य के प्रकाश से बिजली बनाकर बैटरी, सेल को चार्ज कर घरों आदि में विभिन्न कार्य करते हैं। अगर किसी मेज पर एक पुस्तक रखा हुआ है। उसको मेज पर खिसकाने के लिए यानी स्थान परिवर्तन करने के लिए पुस्तक को ऊर्जा देना यानी बल लगाना पड़ेगा। क्योंकि बगैर शक्ति के कोई कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है। पुस्तक पर इस शक्ति को हम अपने हाथ द्वारा बल लगा सकते हैं अथवा किसी अन्य वस्तु जैसे डंडा, पेंसिल, पेन को हाथ से पकड़ कर पुस्तक पर बल लगा सकते हैं। विज्ञान में इसे एनर्जी यानी शक्ति कहते हैं। अग्नि सृष्टि के मूल मे विद्यमान एवं सर्वव्यापक है। अग्नि का यह महत्व है कि अग्नि यानी गर्मी यानी उर्जा के बगैर सृष्टि का संचालन सम्भव नही है। अग्नि समस्त प्राणियों की जीवनदायिनी एवं विध्वंसक भी है। सम्पूर्ण विश्व के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े पदार्थों में अग्नि व्याप्त है। अग्नि से ही समस्त प्राणियों के जीवन का संचालन होता है जिसे आर्युवेद में जठराग्नि कहते हैं। अग्नि सम्बन्ध किसी भी कार्य को करते समय यदि अग्नि की आँच कम या ज्यादा हो जाय तो होता हुआ कार्य बिगड़ जाता है। अधिकांश जन समझते हैं कि अग्नि जितनी ही तेज, प्रचंड यानी ऊँची–ऊँची विविध रगों की लपलपाती ज्वालाओं की ही होती है, जिसमें डाले गये समस्त पदार्थ सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म होकर हवा अन्तरिक्ष, सूर्य आदि के लोकों में चली जाती है, जो मात्र काल्पनिक, अन्धविश्वास, भ्रम, भ्रांति ही है, क्योंकि प्रचण्ड अग्नियाँ पदार्थों को छिन्न भिन्न, दहन, भष्मीभूत कर समस्त मूल रसायनों की समस्त शक्तियाँ, गुण हर लेती हैं यानी दहन, भष्म कर उसे अन्य विजातिये पदार्थों के रसायनों के गैसों में परिवर्तित कर हवा में ही फैला देती हैं जिनके गुण सर्वथा भिन्न होते हैं एवं जिनसे वायु दूषित होता है, जो ज्वालाओं के ऊपरी सतह से मात्र 1 से 3 मीटर ऊपर ऊंचाई तक ही जा सकती है, जहाँ तक दहन से निकलने वाली अत्यधिक गर्म गैसें, अगल बगल के वायु के साथ मिश्रित होकर अगल बगल के वायु के तापमान के बराबर तक ठंडी हो जाती है, फिर वह उसके ऊपर नही जा सकती हैं। अधिकांश विद्वान ज्वालाओं वाली अग्नि के अतिरिक्त अन्य अग्नियों को अग्नि नही मानते हैं जबकि मध्यम एवं निम्न आँच की अग्नियाँ जो ज्वालारहित ही होती हैं, में पदार्थों का दहन, भश्म करने की शक्ति नही होती है, बल्कि वह उनको गर्मी यानी उर्जा देकर मात्र, वायुरुप यानी वाष्प यानी भाप मे परिवर्तित कर हवा में मूलरुप में, मूल गुणों के साथ ही हवा में फैला देती है। प्रकृति में अधिकांश पदार्थों एंव जीवों में विविधताएँ, प्रजातियाँ हैं। कितने तरह के गाय, मनुष्य, बंदर, बकरी, फल, अनाज, ग्रहादि, मिट्टी, पहाड़, आम, सेव, चावल आदि हैं। इन विविध मदों में प्रत्येक मदों के भी कई विविध रुप यानी प्रजातियाँ हैं। इसी तरह अग्नि के भी विविध रुप, विविध आँच, विविध तापमान, विविध प्रभाव वाले होते हैं जिनका हम प्रतिदिन विविध कार्यों में उपयोग करते हैं।

1. वेदों और शास्त्रों में अग्नि के रुप :– वेदों और शास्त्रों में शब्द 'अग्नि' अनेकों बार लिखा है परन्तु यह नही लिखा हुआ है कि किस कर्म, किस कार्य हेतु किस प्रकार की अथवा किस आँच की अग्नि ली जानी है। इसे कर्म करने वाले को स्वयं, कर्म के लक्ष्य, ध्येय के अनुसार निर्धारित करना है जिससे किए जाने वाले कर्म से प्रत्यक्ष रुप में अधिकतम लाभ मिले। वेदों में यज्ञ कर्म करने हेतु कई मंत्र हैं। समस्त वेद सार्वदेशिक, सर्वकालिक, सार्वभौमिक है। इसी कारण वेदों में विभिन्न सर्वकल्याणकारी कार्यों, कर्मों को करने के लाभ, ध्येय, लक्ष्य आदि ही लिखा है, परन्तु कर्मों को करने की प्रक्रिया, कर्मकांड, सामग्रियाँ एवं साधन आदि नहीं लिखा है जिसे कार्य यानी कर्म करने वाले को स्वयं देश, स्थान, समय काल, वातावरण, मौसम, प्रसंग आवश्यकता आदि के अनुसार स्वयं निर्धारित करना है, जिससे सर्वाधिक वांछित लाभ मिल सके। सामग्री में ही अग्नि भी आता है। यही बात अग्निहोत्र पर भी पालन किया जाना है। परन्तु अग्निहोत्र यज्ञ में आहुतियों को "ज्वालायुक्त यानी लौयुक्त अग्नि" में ही दी जाती हैं। यज्ञ भी सार्वदेशिक, सार्वकालिक कर्म है जिसके लिये घृत सभी देशों में उपलब्ध है परन्तु हव्य के सामग्री देश काल ऋतु, मौसम, वातावरण एवं आवश्यकता एवं उपलब्धता के अनुसार भिन्न भिन्न होगें।

वेदों में शब्द "अग्नि" बार बार आया है जो समस्त प्रकार के ऊर्जाओं के लिए है। किस मन्त्र में किस प्रकार की उर्जा, किस तीव्रता की उर्जा का उपयोग करना है, वह सब आवश्यकता प्रसंग और प्रकरण आदि पर निर्भर करता है। वेदों में कर्म करने एवं उससे प्राप्त होने वाले लाभों को लिखा है परन्तु कर्म करने के साधन, सामग्री एवं प्रक्रिया नही लिखा है क्योंकि वेद सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, विश्व, सभी काल खडों एवं ऋतुओं, मौसमों के लिए है, जो परिवर्तनशील होते हैं। जहां जो जो सामग्रियां व साधन उपलब्ध हो और जैसा ऋतु एवं आवश्यकतायें हों, उसी के अनुसार कर्म क्रिया करना होगा जिससे अधिकाधिक लाभ मिल सके। इन्हीं कारणों से वेदों में केवल शब्द अग्नि ही बार बार लिखा है। मेरे ज्ञान में वेदों में अग्नि के विभिन्न रुपों, गुणों एवं होने वाले प्रभावों अथवा लाभ हानि का वर्णन नहीं लिखा है। यह विवरण शास्त्रों में लिखा है। मुण्डकोपनिषद के मंत्र "काली कराली च मनोजवा च सुलेहिता या च सघूम्रवर्णा। स्फुलिगंनी विश्वरुपी च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वा। 1/2/4 के अनुसार अग्नि की शिखाएं यानी लपलपाती ज्वालाएं, 7 प्रकार यानी रुपों वर्णों, रगों की दिखाई देती हैं– 1. काली= कृष्णवर्णा 2. कराली=भयंकर 3. मनोजवा=मन के सदृश वेगवती 4, सुलोहिता=लाल रगं 5, सुधूम्रवर्णा=धुएं के रंग वाली 6, विस्फुलिङिग्नी=चिंगारियों वाली तथा 7, विश्वरुची=नाना शोभा वाली।" यहां यह विचार करने की आवश्यकता है कि जब अग्नियाँ 7 वर्णों की होती हैं, तो उनके गुण, उष्णता की तीव्रता और विभिन्न पदार्थों पर उनके प्रभाव, व्यवहार, उपयोग भी अलग अलग होने ही चाहिए। एक समान अग्नियों के गुण एवं प्रभाव ही, एक समान हो सकते हैं। यह सातों वर्णों की ज्वालाएं प्रायः वृहद अग्नियों में एक साथ दिखाई देती हैं जैसे वृहद ज्वालायुक्त यज्ञों एवं घरों जंगलो आदि वृहद अग्नियों में दिखाई देती हैं। सामान्य ज्वालाओं वाली अग्नियों में इनमें कुछ ही वर्णों की अग्नियां दिखाई देती हैं जैसे रसोई घर के लकड़ी के चूल्हों, गैस के चूल्हों एवं लोहार, स्वर्णकारों के भट्ठियों आदि में। प्रत्यक्ष में भी ज्वालायुक्त अग्नि के ज्वालाओं/लपटों में हमें कई रगों की ज्वालाएँ दिखाई देती हैं, जो दहन यानी ज्वलन हो रहे पदार्थों के रसायनों, ज्वालाओं यानी लपटों की तीव्रता यानी तापमान एवं वायु की आपूर्ति दर गति आदि पर निर्भर करती हैं। यह रगें – 1. काला, 2. बैगनी, 3. पीला, 4. लाल, 5. सफेद, 6. नारंगी, 7. नीला, 8. हरा, 9. स्लेटी के अतिरिक्त अन्य रगों की भी होती हैं। इन रगों में भी गाढ़ा, हल्का, धीमा, गंदा, चमकदार आदि भी अलग अलग हो सकते हैं जो अग्नियों की तीव्रता पर निर्भर करती है। स्वामी दयानंद जी ने अग्नियों के गुण, व्यवहार एवं प्रभाव आदि हेतु सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न समुल्लासों में लिखा हैः–

(अ) समुल्लास 3 में – "उत्तर–जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो, जहाँ हवन होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरुषों को नसिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने से समझ लो कि अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म होकर फैलकर वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृति करता है।" इसमें केवल शब्द अग्नि ही लिखा है जबकि अग्नि कई प्रकार की होती है। अतः किस अग्नि में पदार्थों की अवस्था सूक्ष्म होकर फैलकर वायु के साथ दुर्गन्ध की निवृति करता है, इसका विज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के आधारों एवं प्रयोगों को करके निर्धारित करना होगा।

(ब) समुल्लास 4 में – "चौथा वैश्वदेव– अर्थात जब भोजन तैयार हो तब जो कुछ भोजनार्थ बने, उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षार को छोड़के घृत–मिष्टयुक्त अन्न लेकर चूल्हे से अग्नि लेकर अलग धर निम्नलिखित मंत्रों से आहुति और भाग करें।" स्वामी दयानन्द जी ने पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को लगभग 150 वर्ष पूर्व लिखा था। उस समय चूल्हों में लकड़ी या कंडा ही जलाया जाता रहा होगा। चूल्हे की अग्नि जो अलग रखी जा सकती हो, वह कोयला या कंडा की ही अग्नि हो सकती है, जिसमें आहुतियां देने से, इन पदार्थों का दहन नही होता है, बल्कि यह पदार्थ गर्म होकर मात्र वाष्प यानी वायुरुप में परिवर्तित होकर जिसमें पदार्थ की रसायनें सूक्ष्म कणों में अलग अलग हो कर हवा में फैलती है। इन वाष्प कणों में घृत एवं हव्य के मूल रसायनों के समस्त गुण सुगन्ध, स्वाद, औषधीय गुण आदि यथावत् ही रहते हैं। यदि इन कोयला कंडा की ज्वालारहित अग्नियों अथवा इसी प्रकार के ज्वालारहित अग्नि के अन्य स्त्रोतों जैसे बिजली के हीटर, धूपदानी, हाटप्लेट, सोलर हीटर आदि में डालने से कुछ भी दहन, भष्म नहीं होती हैं। लाभदायक पदार्थों की यह रसायनें समस्त मनुष्यों, जानवरों, पशु पक्षियों को श्वांस लेने पर नासिकाओं से ग्रहण होकर विभिन्न लाभ देते हैं और हानिकारक पदार्थों के वाष्प की रसायनें हानिकारक होती हैं। कोयला या कंडा की यह अग्नि मध्यम आँच की होती है। इसमें अग्नि के ज्वालाओं जितना उच्च तापमान नही होता है कि डाले गये यानी आहुति किए गए पदार्थों का दहन हो सके।

(स) समुल्लास 10 के तृतिय अथवा चतुर्थ पृष्ठ में लिखा है, "यह निश्चय है कि अग्नि में ईंधन और घी डालने से बढ़ता जाता है, वैसे ही कामों के उपभोग से काम शांत कभी नही होता, किन्तु बढ़ता जाता है, इसलिये मनुष्य को विषयासक्त कभी न होना चाहिये।।3।।" इस उदाहरण को स्वयं देखने हेतु यदि हम घी, ईंधन को "ज्वालायुक्त अग्नि" में धीरे धीरे डालें तब देखेगें कि अग्नि की ज्वालायें बढ़ती रहती हैं। अब हम ऋषि के इस उदाहरण को मनुष्यों के सोच विचार और कर्मों पर देखते हैं। उत्तेजना, उद्वेग, आवेग के कर्म जैसे काम, क्रोध, मद, लोभ, द्वेष एवं अन्य सभी बुरे विचारों प्रवृत्तियों में उद्यत, लिप्त, लगे रहने से यह बुराइयाँ, भावनाएँ लालसायें, प्रवृतियाँ बढ़ती ही जाती हैं जब तक इन पर लगाम नही लगाया जाता है। अब हम ऋषि के इस उदाहरण को पुनः मनुष्यों के सोच विचार और कर्मों पर देखने हेतु, घी ईंधन को दूसरे प्रकार की "ज्वालारहित अग्नि" जैसे कोयला या कंडा की अग्नि जो लपलपाती, घटती बढ़ती ज्वालाओं के न होने के कारण शांत, शिथिल, स्थिर अग्नि में डालेगें तब इनका दहन होना या ज्वालाएं बढ़ना नहीं दिखेंगी बल्कि इनके सुगंध आदि शांतिदायक गुण बढ़ते जाते हैं और मूल गुण हजारों गुना बढ़कर, वाश्प यानी वायुरुप में परिवर्तित होकर हवा में चहुँ ओर फैलकर हजारों प्राणियों को नसिका द्वारा ग्रहण होकर लाभ ही लाभ देती हैं जिन्हे हम कुछ ऊँचाई तक अपने आंखो से धुंआ के रुप में फैलते हुए देखते हैं। इसी प्रकार प्रणायाम, ध्यान योग एंव पर उपकार के मन विचार भावनायें लगाने पर यह शांत, सर्वआनन्ददायक प्रवृतियां, लालसाएं विचार बढ़ती जाती हैं जिससे मन में शांति, प्रसन्नता बढ़ती है। अर्थात सारांश में घी ईंधन का प्रचंड विध्वंशक अग्नि से मेल सम्पर्क कराने पर इनका भी विध्वंश यानी भष्म होता जाता है। जब इसी घी इन्धन का शान्त अग्नियों से संपर्क, मेल कराने पर यह स्वयं हजारों गुना वायु रुप में बढ़कर चहुँओर सुगंध, औषधीय आदि लाभ बढ़ाती हैं।

(द) समुल्लास 11 में – "प्रश्न– ज्वालामुखी तो प्रत्यक्ष देवी है, सबको खा जाती है और प्रसाद देवे तो आधा खा जाती और आधा छोड़ देती है। (करीब 5 लाइन के बाद) –उत्तर –नहीं। क्योंकि वह ज्वालामुखी पहाड़ में से आग निकलती है। उसमें पुजारी पोपों की विचित्र लीला है। जैसे बघार के घी के चमचे में ज्वाला आ जाती, अलग करने से व फूँक मारने से बुझ जाती, थोड़ा सा घी को खा जाती, शेष छोड़ जाती, उसी के समान वहां भी है। जैसे चूल्हे की ज्वाला में जो डाला जाये सब भस्म होता, जंगल व घर में लग जाने से सबको खा जाती है।" बघार, चूल्हे, जंगल, घरों आदि में लगी अग्नि "ज्वालायुक्त" ही होती है। जो विध्वंसक यानी पदार्थों के मूल रुप एवं गुणों को छिन्न–भिन्न, खंडित कर भस्म यानी समस्त शक्तियां नष्ट कर मुख्यतयाः प्रत्यक्ष अनुभूति में गंधहीन, रगंहीन, स्वादहीन गैसें हवा में फैलती हैं। विज्ञान के अनुसार दहन के फलस्वरुप हवा में कार्बन डाईआक्साइड गैस, थोड़ा जल वाष्परुप में एवं उर्जा यानी गर्मी ज्वालाओं के रुप में फैलती हैं। जलते हुए लकड़ी के चूल्हे में उठती हुई लपटें यानी ज्वालाएँ भी "ज्वालायुक्त अग्नि" होती है। इसी प्रकार की अग्नि में दिया, दीपक, लालटेन, पेट्रोमैक्स आदि को जला कर प्रकाश किया जाता है। इसी अग्नि में भोजन पकाने के लिए ठोस अज्वलनशील पदार्थों के बर्तन उपयोग किए जाते हैं जिससे उनका दहन न हो सके और आँच को आवश्यकतानुसार नियंत्रित किया जा सके।

इसी "ज्वालायुक्त अग्नि" में मुर्दों, लाशों को जलाकर दहन यानी भष्मीभूत किया जाता है जिससे शव के मांस मज्जा के वाष्प यानी धुंआ हवा में न फैले जो अत्यधिक दुर्गन्धित होता है। इसीलिए शव के शत प्रतिशत भष्म होने को सुनिश्चित करने के लिए शीघ्र दहन वाले पदार्थों का प्रचुर मात्रा में उपयोग किया

शेष पृष्ठ 3 पर

पृष्ठ 2 का शेष

अग्नि विज्ञान– गुण एवं प्रभाव

जाता है जिससे शव जरा सा भी सुलगने न पाये अन्यथा सुलगने से वायु बहुत ही दुर्गन्धित होगी।

(ध) समुल्लास 12 में – "उत्तर – यह तुम्हारी बात लड़केपन की है। प्रथम तो देखो, जहाँ छिद्र और भीतर के वायु का योग बाहर के वायु के साथ न हो तो वहाँ अग्नि जल ही नहीं सकता। जो इसको प्रत्यक्ष देखना चाहो तो किसी फानूस में दीप जलाकर सब छिद्र बंध करके देखो तो दीप उसी समय बुझ जायेगा। जैसे पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य आदि प्राणी बाहर के वायु के योग के बिना नहीं जी सकते, वैसे अग्नि भी नहीं जल सकती।" इससे विदित होता है कि स्वामी दयानन्द जी विज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रमाण में प्रयोग के द्वारा, यह जानते थे कि कोई पदार्थ बगैर हवा के दहन यानी ज्वलन नहीं हो सकती है। फानूसों, लालटेनों, पेट्रोमैक्सों आदि में हवा के अंदर घुसने के लिए नीचे कई छोटे–छोटे छिद्र तथा दहन के पश्चात कार्बन डाइआक्साइड आदि गर्म हवा के बाहर निकलने के लिए ऊपर छोटे–छोटे छिद्र होना अति आवश्यक है, अन्यथा इन उपकरणों में तेलों का दहन नहीं हो सकेगा जिससे प्रकाशादि नहीं हो सकता है। समस्त अग्नियाँ एवं समस्त पदार्थ जड़ होते हैं जो अपने गुण एवं प्रभावों, व्यवहारों को परिवर्तित नहीं कर सकते हैं जिसे स्वामी दयानन्द जी ने कई समुल्लासों में प्रश्नों के उत्तर में लिखा। इसी कारण उन्होंने अग्नि एवं पदार्थों को महिमा मंडित करने वाली बातों को कहीं नहीं लिखा है।

2. विज्ञान के अनुसार अग्नियाँ :– विज्ञान के भौतिक शास्त्र के अनुसार बिजली, प्रकाश, ध्वनि, अग्नि, बल आदि उर्जा यानी शक्ति के विविध रूप हैं। इन्हें एक–दूसरे शक्ति के रूपों में परिवर्तित किया जा सकता है। क्योंकि बगैर शक्ति के कोई कार्य नहीं संपन्न हो सकता है। अगर हमें सीढ़ियां चढ़नी है तो हमें बल लगाकर अपने एक पैर को उठाकर अगली ऊपरी सीढ़ी पर रखना ही होगा और ऐसा ही वांछित मंजिल तक पहुंचने को लगातार करना ही होगा। यदि हमें कुछ भार ले जाना है तो उसके लिए अतिरिक्त बल लगाना ही होगा। लिफ्ट द्वारा यही बल बिजली के मोटरों द्वारा लगा कर, हम स्वयं बगैर कुछ किए मंजिलों पर चढ़ते हैं। विज्ञान में इसे एनर्जी यानी शक्ति कहते हैं। यदि हमें जल को गर्म करना है तो हम उसे बिजली अथवा अग्नि के प्रयोग से उर्जा यानी गर्मी देकर गर्म कर सकते हैं ।

ज्वलनशील पदार्थों को ईधंन भी कहते हैं। विज्ञान के रसायनशास्त्र में अग्नि उसे कहते हैं, जब हवा के घटक आक्सीजन गैस के साथ, ईंधन का तीव्र ऑक्सीकरण यानी रासायनिक क्रिया होती है जिससे इन दोनों के संयोग के फलस्वरुप, गर्मी यानी उष्मा, और अन्य अनेक रासायनिक उत्पाद जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, कुछ अन्य गैसें और जल भाप के रुप में उत्पन्न होते हैं। तीव्र ज्वलन यानी दहन में कई रंग की ज्वालाएँ प्रकाश के साथ उत्पन्न होती हैं। इन्हें ज्वालायुक्त अग्नि कहते हैं। जो दहन तीव्र नहीं होते हैं, उनमें ज्वालायें नहीं होती हैं, जैसे कोयला या कंडा के दहन में। इन्हें ज्वालारहित अग्नि कहते हैं। दहनशील पदार्थ में सन्निहित अशुद्धि के कारण ज्वालाओं के रंग और अग्नि की तीव्रता में अंतर हो सकता है। सामान्य रूप में अग्नि यानी आग से गर्मी पैदा होती ही होती है। जब अग्नि एक बार जलने लगती है यानी श्रृंखलाबद्ध रासायनिक क्रिया प्रारम्भ हो जाती है, तो जब तक ऑक्सीजन और दहनशील दोनों पदार्थों की उपस्थिति रहती है, तभी तक वह दहन यानी ज्वलन होती रहती है। ऑक्सीजन और ईंधन में से किसी एक को अलग करके, अग्नि को बुझाया जा सकता है। अग्नि पर पानी की पर्याप्त बौछार पड़ती है तो ईंधन को ऑक्सीजन मिलने में बाधा पड़ती है, तब अग्नि धीमी हो जाती है एवं बुझ भी सकती है। अग्नि पर कार्बन–डाइऑक्साइड के प्रयोग से भी बुझाई जा सकती है। इसी गैस का उपयोग अग्नि बुझाने वाले यंत्रो में होता है। इसी प्रकार जल रही अग्नि पर बालू, मिट्टी, गीला कपड़ा, गीला कंबल आदि को डालकर भी बुझाया जा सकता है, जो हवा की आपूर्ति कम एवं बन्द भी कर देती है। अग्नि की तीव्रता के अनुसार विभिन्न पदार्थों पर भिन्न–भिन्न प्रभाव होता है। आधुनिक विज्ञान में अग्नि की आँच यानी तीव्रता को तापमान, तापक्रम कहते हैं और प्रायः इसे सेंटीग्रेड यानी सेल्सियस अथवा फारेनहाइट की इकाई में नापा जाता है। इन दोनों की इकाइयों को इस उदाहरण से समझें कि शुद्ध जल शून्य सेंटीग्रेड तापमान पर जम जाता है जो 32 फारेनहाइट के बराबर होता है। इसी प्रकार शुद्ध जल 100 सेंटीग्रेड तापमान पर उबलने लगता है, जो 212 फारेनहाइट के बराबर होता है। इसे हम ऐसे समझ सकते हैं कि जैसे वर्तमान में हम किसी भी सामान के भार को किलोग्राम, ग्राम एवं मिलीग्राम में तौलते हैं, जिसे 1960 के पहले सेर, छटाक एवं तोला आदि में तौला जाता था। हम स्वस्थ मनुष्यों का तापमान 98.4 फारेनहाइट होता है। बुखार की बीमारी में शरीर का तापमान बढ़ जाता है। मनुष्य शरीर के 101 फारेनहाइट तापमान तक को सामान्य बुखार और इससे ज्यादा 102 फारेनहाइट तापमान तक को तेज बुखार और 102 फारेनहाइट से अधिक तापमान को 'बहुत तेज बुखार' कहते हैं। विभिन्न पदार्थों के दहन यानी ज्वलन से उत्पन्न ज्वालाओं के लपलपाती शिखाओं के रंग, दहन हो रहे पदार्थों के रसायनों एवं तापमान पर निर्भर होते हैं। लकड़ी एवं वनस्पतीय पदार्थ लगभग 150 सेंटीग्रेड पर सुलगना प्रारम्भ करते हैं। कोयला या कंडा के अग्नि का तापमान 300 से 800 सेंटीग्रेड होता है। जल रही मोमबत्ती एवं वनस्पतीय, लकड़ी आदि पदार्थों के ज्वालाओं में आतंरिक सबसे नीचे जहाँ ज्वालाएँ प्रारम्भ होती हैं वहीं पर काले रंग का घेरा यानी त्रिशंकु ज्वालाएं दिखाई देती हैं जिसका तापमान 450 से 550 सेंटीग्रेड होती है। इस त्रिशंकु यानी कोन के ऊपर लाल रंग की ज्वाला का तापमान 550 से 800 सेंटीग्रेड, नारंगी रंग की ज्वाला का 800 से 1000, सफेद 1000 से 1200 एवं नीले रंग की ज्वाला का 1200 से 1650 सेंटीग्रेड होता है। मोमबत्ती आदि के ज्वलन, दहन में जिन कोयला के कणों का दहन नही हो पाता है, वह ज्वालाओं के ऊपर कुछ ऊँचाई तक आँखों से काले रंग के कणों के रूप में उड़ते हुए दिखाई देते हैं। जिन पदार्थों एवं लकड़ियों आदि में पोटैशियम तत्त्व होते हैं इनके दहन में बैंगनी रंग की ज्वालाओं का तापमान 1200 से 1400 सेंटीग्रेड होता है।

अग्नि एवं पदार्थ की अवस्थायें :–

(अ) पदार्थों की भौतिक अवस्था – विज्ञान के अनुसार संसार में जितने पदार्थ हैं, वह उनके तापमान के अनुसार, तीन अवस्थाओं, प्रथम ठोस, द्वितीय तरल अथवा तृतीय वाष्प यानी गैस की अवस्था में रहते हैं। जैसा उपरोक्त लिखा है कि जल, शून्य यानी 0 सेंटीग्रेड से 100 सेंटीग्रेड के तापमान के बीच में तरल अवस्था में रहता है, 0 सेंटीग्रेड से कम पर ठोस अवस्था यानी बर्फ के रुप में तथा 100 सेंटीग्रेड से ऊपर तापमान पर वाष्प रुपान्तरित होकर यानी भाप, गैस अवस्था में रहता है। उसी प्रकार घृत लगभग 25 डिग्री सेंटीग्रेड से लगभग 160 सेंटीग्रेड के बीच तरल अवस्था में रहता है, 25 सेंटीग्रेड से कम पर रुपान्तरित होकर ठोस अवस्था तथा 160 सेंटीग्रेड से ऊपर तापमान पर रुपान्तरित होकर भाप, गैस, वाष्प यानी सूक्ष्मतम कणों की वायुरुप अवस्था में रहता है और वायुमंडल में फैलने लगते हैं। इसी सूक्ष्मतम कण की रुपान्तरित अवस्था की बात, सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–3 यज्ञ सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तरों में लिखा है। इन सूक्ष्मतम कणों में, पदार्थ के समस्त भौतिक गुण जैसे रंग, स्वाद, गंध, यानी सुगन्ध या दुर्गन्ध एवं रासायनिक गुण जैसे औषधीय मीठापन गुण आदि एक समान होते हैं। कुछ भी किसी रुप में कोई बदलाव नहीं होता है। संसार के ज्यादातर सामग्रियों को ठंडा अथवा गर्म कर ठोस, तरल, वाष्प यानी गैस के रुप में बार–बार परिवर्तित किया जा सकता है। जैसे जल को गर्म करते रहने पर वह भाप यानी वाष्प बनकर वायुमंडल में उड़कर फैलने लगता है, भाप को ठंडा कर जल और जल को ठंडा कर बर्फ बनाया जा सकता है। बर्फ को गर्म करने पर जल बन जाता है। इसी प्रकार अधिकांश बनस्पति सामग्रियों जिसमें उड़नशील पदार्थ रहते हैं, को लगभग 160 डिग्रीसेंटीग्रेड से अधिक गर्म करने पर उनमें स्थिति उड़नशील रसायनों को वाष्प यानी धुंआ यानी वायुरुप में हवा में फैलने लगते हैं, जिसमें उनकी सुगंध, स्वाद एवं सभी गुण यथावत् होते हैं। दूध तरल अवस्था में होता है। इसे लगातार उबालने पर जल की मात्रा घटती जाती है और जब जल की मात्रा बहुत ही कम हो जाती है, तब यह बहुत गाढ़ा पदार्थ रबड़ी फिर और गाढ़ा होने पर खोया बन जाता है, जिसमें दूध के समस्त गुण यथावत रहते हैं। जिसमें जल की मात्रा बढ़ाने से पुनः दूध बन जाता है क्योंकि दूध से खोया, रबड़ी बनाने में कोई रासायनिक परिवर्तन नही होता है बल्कि मात्र अवस्था परिवर्तन ही होता है। यदि दूध में नीबू या थोड़ा दही डाल कर जमा दिया जाता है तब यह दही बन जाता है जिसमें दूध के अधिकांश गुण परिवर्तित हो जाते हैं जिससे इसे पुनः दूध वापस नहीं बनाया जा सकता है क्योंकि दूध में नीबू, दही आदि डालने से इनका दूध के रसायनों के साथ रासायनिक क्रिया होने के कारण रासायनिक परिवर्तन हो जाते हैं। इसी प्रकार दूध से पनीर, छेना आदि बनाने के बाद इसमें दूध के मूल गुण नहीं रहते हैं।

(ब) अग्नि का पदार्थों पर प्रभाव – अग्नि के संपर्क में आने वाले पदार्थों में जब ऊष्मा, गर्मी समाती यानी प्रविष्ट यानी विलीन होती जाती है तब उनके कणों के बीच की दूरी एवं तापमान बढ़ती जाती है। इससे उसका आयतन यानी लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई यानी जगह घेरने की क्षमता भी बढ़ती जाती है। यह बढ़ने की क्रिया ठोस पदार्थों पर बहुत कम, तरल पदार्थों पर कम और गैसीय पदार्थों पर अत्यधिक होता है। तरल एवं गैसीय पदार्थों के बढ़ने को हम अपने घर में साधारण प्रयोगों को करके देख एवं सत्यापित कर सकते हैं। एक काँच की शीशी में लबालब जल भरकर ढक्कन कसकर बंद कर दीजिए। अब इसे किसी बर्तन में पूरी शीशी रखकर, बर्तन में इतना जल भरिए कि पूरी शीशी डूब जाये। अब इस बर्तन को चूल्हे पर रखकर कर धीरे–धीरे गर्म होने दीजिए। स्वयं थोड़ा दूर किसी दीवार या दरवाजे के पीछे सुरक्षित स्थान पर खड़े हो जाइए। बर्तन, जल, शीशी एवं भरे जल को गर्म होने दीजिए। शीशी ठोस होने के कारण कम बढ़ेगा परन्तु उसमें भरा जल अधिक बढ़ेगा जिससे शीशी के अदंर जल का दबाव बढ़ता जाएगा और एक स्थिति में कुछ दगने के आवाज के साथ या तो ढ़क्कन खुल जाएगा या फिर शीशी टूट जायेगी। एक गुब्बारा लेकर उसमें हवा भर दीजिए। अब जब इसे गैस के चूल्हे के बर्नर के ऊपर उपयुक्त ऊँचाई लगभग 4, 5 इंच ऊपर रखिए, जिससे गुब्बारे के रबड़ एवं अंदर भरी हवा को गर्मी मिलेगी। इससे रबड़ बढ़कर अधिक लचीला होगा परन्तु अन्दर की हवा का आयतन तेजी से बढ़ेगा जिससे गुब्बारा अधिक फूलता जाएगा और फूलते–फूलते फट जाएगा। जब प्रेशर कुकर को हम गैस पर चढ़ा देते हैं तब अन्दर का पानी गर्म होने लगता है। प्रेशर कुकर ठोस होने के कारण कम बढ़ता है पर अन्दर का जल तरल कुछ अधिक बढ़ता है। जल का तापमान 100 डिग्री सेंटीग्रेड पहुंचते ही उबलने लगता है, जो और अधिक गर्मी पाकर वाष्प यानी भाप में परिवर्तित होने लगता है जिससे इसका आयतन अत्यधिक बढ़ने को होता है, परन्तु चारों ओर से घिरा, बंद होने के कारण बढ़ नहीं पाता है। ऐसी स्थिति में प्रेशर कुकर के अंदर वाष्प दबाव अत्यधिक बढ़ता जाता है। जब भाप का दबाव बहुत ज्यादा बढ़ जाता है, तब वह सीटी को ऊपर उठाने में सक्षम हो करके सीटी बजाते हुए बाहर निकलने लगता है।

(स) दहन या ज्वलन – किसी भी ज्वलनशील सामग्री के वायु या आक्सीकरण द्वारा जल जाने की क्रिया को दहन या ज्वलन कहते हैं। यह उष्मा यानी गर्मी पैदा करने वाली क्रिया है। इस क्रिया में ज्वालाएं आखों को दिख भी सकती हैं और नहीं भी। इस प्रकार ज्वलन के लिए हवा का, आक्सीजन गैस या इसका अन्य स्रोत अवश्य ही चाहिए जिसके बगैर ज्वलन नहीं हो सकती है। ज्वलन के उत्पाद कार्बन डाईआक्साइड आदि गैसों द्वारा वायु प्रदूषित होता है। हवा अथवा ज्वलनशील सामग्री की आपूर्ति बंद कर ज्वलन को बंद किया जा सकता है। अतः ज्वलन से एक तो वायु की आक्सीजन जिसे प्राणवायु भी कहते हैं की खपत व्यय होने से वायु दूषित होता है। उसी आक्सीजन के साथ ज्वलन से पैदा होने वाली कार्बन डाईआक्साइड आदि गैसों के वायु में मिलने के कारण, दोहरे रुप से भी प्रदूषित होती है। इसे सम्पूर्णता में संज्ञान लेकर विचार कीजिए कि पदार्थों के ज्वलन से वायु कैसे दोहरे रुप से प्रदूषित होता है। जिस तापमान पर हवा के आक्सीजन से रासायनिक क्रिया कर जलना यानी दहन होना प्रारम्भ करती हैं उस तापमान को उस सामग्री का "ज्वलन अथवा दहन या जलने का तापमान" जाना जाता है, जो प्रत्येक सामग्री की भिन्न–भिन्न होती है। इस क्रिया में पदार्थ की समस्त रसायनें परिवर्तित होकर एक से अन्य कई रसायनों में परिवर्तित हो जाते हैं जिसके समस्त भौतिक एवं रासायनिक गुण मूल पदार्थ के समस्त भौतिक एवं रासायनिक गुणों से सर्वथा भिन्न होते हैं। यह संज्ञान लेना आवश्यक है कि विश्व के सभी दहन यानी जल सकने वाले पदार्थ चाहे वह वनस्पति, पृथ्वी से निकला, ठोस, तरल, गैस, अमृत, जहर, सुगंधित, दुर्गन्धित आदि आदि हों जिनके दहन होने के फलस्वरुप हवा में केवल कार्बन डाईआक्साइड गैस के साथ कुछ अन्य गैसें सूक्ष्म मात्रा में, कुछ जल वाष्प के रुप में एवं अत्यधिक उष्मा ही उत्पन्न होकर हवा में फैलती है। कार्बन डाईआक्साइड गैस रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन हवा को प्रदूषित करने वाली ही होती हैं।

इसीलिये यदि घर में घरेलू गैस का सिलेन्डर लीक कर, गैस हवा में फैल जाये यानी उसकी दुर्गन्ध आने लगे तो ऐसी स्थिति में पूरे घर में कोई भी चीज जैसे दियासलाई, बिजली का स्विच ऑन ऑफ यानी चालू बंद करने को मना किया जाता है। जिससे हवा में फैले गैस को कोई चिनगारी यानी "ज्वलन तापमान" न मिल सके और घर में आग न लगे। इसी प्रकार वाहनों के इंजन के चैम्बर में पेट्रौल, डीजल और हवा के मिश्रण को स्पार्क प्लग से चिनगारी देकर यानी "ज्वलन तापमान" देकर, मिश्रण को जला कर उर्जा प्राप्त कर इंजन को चलाया जाता है। पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल, तारपीन के तेल का ज्वलन तापमान बहुत कम होता है। दहन यानी ज्वलन कराने का मुख्य ध्येय ऊष्मा, गर्मी, उर्जा प्राप्त करना होता है। घरों में लकड़ी, विभिन्न कोयलों, कंडों, मिट्टी के तेल, कई गैसें जिसे हम रसोईघर में जलाते हैं एवं वाहन भी चलाते हैं, का दहन मात्र ऊष्मा, गर्मी पैदा कर, भोजन पकाने आदि के लिये किया जाता है।

(द) ज्वाला यानी लौ क्या होते हैं – ज्वालायुक्त अग्नि में ज्वाला यानी लौ वह क्षेत्र होते हैं जहाँ किसी पदार्थ का दहन होने से उच्च तापमान होने के साथ ही विभिन्न रंग के प्रकाश आदि दिखते हैं, जो वायु में ज्वाला, लपटों के रुप में घटती बढ़ती यानी लपलपाती रहती हैं। यह उच्च तापमान यानी 400 सेंटीग्रेड से अधिक तापमान की प्रकाशित एवं भष्म करने वाली यानी विध्वसंक क्षेत्र होती है, जिसमें दहन हो रहे पदार्थ के उड़नशील घटक वाष्प बनकर ऊपर वायु में आते हैं, जल रहे ज्वालाओं से ज्वलन तापमान से उच्च तापमान पा जाने के कारण दहन होने लगते हैं, जिससे वातावरण में ऊष्मा एवं प्रकाश फैलती है। ज्वाला के क्षेत्र में तापमान लगभग 400 से 1700 सेंटीग्रेड तक हो सकता है। जब दहन हो रहे पदार्थ समाप्त हो जाते हैं, तैसे ही ज्वाला बनने की प्रक्रिया भी समाप्त हो जाती है। ज्वाला के आसपास के क्षेत्र अथवा जो बर्तन आदि लौ के ऊपर रखा जाता है, वह सब गर्म हो जाता है। जब चूल्हे आदि में लकड़ी ज्वाला के साथ जलती है, तब लकड़ी में स्थिति समस्त उड़नशील, तैलीय पदार्थ गर्म होकर, वाष्प बनकर जैसे ही हवा में फैलने के लिये, लकड़ी के ऊपर और ज्वालाओं के निचले

शेष पृष्ठ 6 पर

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में
16 सितम्बर, 2021 को मुक्ति ग्राम बांस खेड़ी, शिवपुरी (मध्य प्रदेश) में प्रेरणा सभा का आयोजन

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी, गरीबों, मजदूरों की आवाज, ओजस्वी वक्ता पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में उनके नेतृत्व में संचालित निःशुल्क अस्पताल व कौशल प्रशिक्षण केन्द्र, मुक्ति ग्राम बाँस खेड़ी, शिवपुरी, मध्य प्रदेश में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस प्रेरणा सभा के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मंत्री एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, मिशन आर्यावर्त चैनल के निदेशक युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कोषाध्यक्ष श्री विष्णु पाल जी दिल्ली से कार्यक्रम में पहुंचे। उनके अतिरिक्त बंधुआ मुक्ति मोर्चा जिला–गूना की अध्यक्ष श्रीमती शशि अहिरवार, अस्पताल के प्रबन्धक सरदार हरभजन सिंह तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा शिवपुरी के अध्यक्ष व इस प्रेरणा सभा के संयोजक श्री गफ्फार खान जी एवं उनकी पूरी टीम उपस्थित रही।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी अग्निवेश को याद करते हुए कहा कि स्वामी जी का कार्य अतुलनीय है। उन्होंने हमेशा गरीब, मजदूर तथा बेसहारा लोगों के लिए कार्य करते हुए अपना जीवन जिया। उसी क्रम में उन्होंने इस बीहड़ स्थान पर गरीबों के इलाज के लिए इस अस्पताल का निर्माण कराया जिससे गरीब, मजदूर एवं बेसहारा लोगों को उचित इलाज मिल सके। स्वामी जी बहुत ही दूरदर्शी थे। स्वामी जी के ऊपर यदि कातिलाना हमला नहीं होता तो शायद उनका साथ एवं सान्निध्य हम सबको कुछ वर्षों तक और मिलता। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी भी चाहते तो आराम की जिन्दगी जी सकते थे। परन्तु उन्होंने अपनी प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर अपना पूरा जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित कर दिया था। ऐसे महान संन्यासी से हम सबको प्रेरणा लेकर उनके द्वारा चलाये गये कार्यों को आगे बढ़ाने तथा समाजसेवा के कार्यों को करने का प्रण लेना चाहिए। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रेरणा सभा में पधारे सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी एक महामानव थे। वे केवल भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानते थे। उनकी सोच व्यापक थी, वे हमेशा कहा करते थे कि एक विश्व सरकार होनी चाहिए जो सभी मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य करे तथा ईश्वर द्वारा रचित सृष्टि में सभी जीव–जन्तुओं की रक्षा की बात करे, पर्यावरण को सुरक्षित रखने में कार्य करे। समाज से साम्प्रदायिक ताकतों का बहिष्कार हो तथा सबसे निचले पायदान पर जीवन यापन कर रहे लोगों के लिए कार्य हो। सभी को समान शिक्षा तथा समान चिकित्सा मिले। उन्होंने इसी सोच के आधार पर इस अस्पताल का निर्माण कराया जिससे समाज के निर्धन लोगों को इलाज मिल सके। ऐसे दिव्यात्मा को हम कभी नहीं भुला पायेंगे। आज इस अस्पताल एवं कौशल प्रशिक्षण केन्द्र में उनकी स्मृति में प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया है। इस प्रेरणा सभा में हम सभी को यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि उनके द्वारा किये गये कार्यों को आगे बढ़ायेंगे।

इस अवसर पर युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने स्वामी अग्निवेश जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके कार्यों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला तथा लोगों को प्रेरित किया कि स्वामी अग्निवेश जी द्वारा चलाये गये प्रकल्पों को तीव्र गति प्रदान करने में अपना–अपना सहयोग ईमानदारी और कर्मठता के साथ प्रदान करें जिससे उनके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाया जा सके। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने आदिवासी क्षेत्र के बच्चों के साथ मिलकर उनके क्रियाकलाप एवं उनके अभाव भरी जिन्दगी को देखा और यह महसूस किया कि यदि इन बच्चों को सुविधाएँ मिले तो ये बच्चे भी देश की प्रगति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं।

स्वामी अग्निवेश जी को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए श्रीमती शशि अहिरवार ने उन्हें एक महापुरुष की संज्ञा दी और कहा कि वे गरीबों, बंधुआ मजदूरों, आदिवासी एवं शोषित लोगों के मसीहा थे। उन्हीं की प्रेरणा से मैं भी गत अनेक वर्षों से बंधुआ मजदूरों के बीच कार्य कर रही हूँ और आज यह संकल्प लेती हूँ कि स्वामी जी द्वारा दिखाये गये रास्तों पर चलकर गरीबों लोगों के लिए कार्य करती रहूंगी।

प्रेरणा सभा में आदिवासी इलाकों के बच्चे तथा महिलाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं मजदूरों को बताया गया कि स्वामी अग्निवेश की पुण्यतिथि 11 सितम्बर से उनके जन्मदिन 21 सितम्बर तक जगह–जगह कार्यक्रम आयोजित करके प्रेरणा सभाओं का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में 21 सितम्बर, 2021 को बहल्पा, गुरुग्राम में आयोजित किया गया है जिसमें आप सभी को भारी संख्या में पधारना है। 21 सितम्बर, 2021 को समापन समारोह के दौरान स्वामी अग्निवेश जी द्वारा मुक्त कराये गये बंधुआ मजदूरों को सम्मानित भी किया जायेगा। इस कार्यक्रम में श्री गफ्फार खॉन के प्रयास से आस–पास के सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। बंधुआ मुक्ति मोर्चा द्वारा मुक्त कराये गये 40 मजदूर परिवारों को यहाँ पर पुनर्वासित कर स्वामी अग्निवेश जी ने मुक्ति ग्राम की स्थापना की थी। उन मजदूरों के लिए यहां पर कौशल प्रशिक्षण केन्द्र तथा अस्पताल बनाया गया था। जिससे उन्हें यहाँ किसी प्रकार की असुविधा न हो। श्री गफार खान ने सभी लोगों के लिए भोजन की समुचित व्यवस्था की थी। उनके परिवार के सभी छोटे–बड़े सदस्य इस कार्य में अपना पूरा योगदान कर रहे थे। उनके साथ श्री शिवशंकर शर्मा पत्रकार, श्री सरदार हरभजन सिंह, श्री गोविन्दी पूर्व सरपंच, श्री सरदार नरेन्द्र ढिल्लन पूर्व सरपंच, श्री बुद्धा, श्री कंवर सिंह, श्री सिद्धार्थ आदि ने भी अपना विशेष सहयोग दिया। कार्यक्रम पूरी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

दयानन्द कालोनी ग्रीन फील्ड, फरीदाबाद में स्वामी अग्निवेश जी को दी गई श्रद्धांजलि
स्वामी अग्निवेश जी ने सामाजिक बुराईयों के खिलाफ चलाए थे कई राष्ट्रव्यापी अभियान
– स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

20 सितम्बर, 2021 को विश्व विख्यात आर्य संन्यासी व बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में दयानन्द कालोनी ग्रीन पफील्ड, पफरीदाबाद में प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री रमेश आर्य, श्री आर.डी. यादव, श्री मकेन्द्र कुमार तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं तथा स्थानीय लोगों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने 1 लाख 75 हजार बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराया और जीवनभर शोषित वर्ग की आवाज बनकर उनके अधिकारों के लिए संघर्षरत रहे। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वप्नों को साकार करने के लिए स्वामी इंद्रवेश जी के साथ मिलकर एक राजनैतिक पार्टी 'आर्य सभा' का भी गठन किया था। किसानों व मज़दूरों को पूंजीवादी व्यवस्था से मुक्ति दिलाने के लिए उन्होंने आंदोलन चलाए।

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी अग्निवेश जी के कार्यों पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि वे मानवता के सच्चे पुजारी थे। स्वामी जी ने देश–विदेश में आर्य समाज के मन्तव्यों के आधार पर कार्य करने का जो डंका बजाया वह अपने आपमें अद्वितीय है। स्वामी अग्निवेश जी वसुधैव कुटुम्बकम् के पोषक थे, वे सम्पूर्ण संसार को एक परिवार मानते थे।

सामाजिक कार्यकर्ता एवं युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे आपातकाल में जेल गए। उन्होंने शराबबंदी आंदोलन चलाया, कन्याभ्रूण हत्या व सतीप्रथा के खिलाफ राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया तथा कई सामाजिक बुराईयों के खिलाफ आन्दोलन चलाकर जन–जागृति फैलाने का कार्य किया। उन्होंने बताया कि राजस्थान के नाथद्वारा मंदिर में दलितों को प्रवेश दिलाया तथा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के मुकाबले में वैदिक समाजवादी व्यवस्था को लागू कराने के लिए संघर्ष किया। समतामूलक समाज की संरचना के लिए उन्होंने जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, शोषण, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन चलाए। आज वे हम सबके बीच भले ही नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा किये गये कार्यों की छाप हम सबके मनःपटल पर अंकित है।

इस अवसर पर सर्वश्री रमेश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री रघुवीर सिंह शास्त्री, हिन्द मजदूर सभा के नेता श्री आर.डी. यादव आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। आर्य समाज के युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप भास्कर व श्री सतीश सत्यम ने भी अपनी ओजस्वी वाणी से गीतों के द्वारा स्वामी अग्निवेश को श्रद्धांजलि दी और उपस्थित जनसमूह को उत्साहित किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री मायाराम ने किया। उनके अतिरिक्त श्री कैलाश, श्री भूपसिंह, श्री मोहन लाल, श्री सेवाराम, श्री रामशरण, श्री कांशीराम, श्री बाबूलाल, श्री अशोक कुमार, श्रीमती ऊषा देवी, श्री किशोरीलाल आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। इस पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था का दायित्व बंधुआ मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री मकेन्द्र आर्य ने संभाला। पंडाल तथा माईक आदि की व्यवस्था श्री ऋषिपाल आर्य अनंगपुर के सहयोग से हुई।

दानापुर, पटना बिहार के 'हिन्दू–मुस्लिम एकता भवन' में

विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का

83 वाँ जन्मदिन तथा विश्व शांति दिवस संकल्प सभा के रूप में मनाया गया

दिनांक 21 सितम्बर, 2021 को स्वामी अग्निवेश जी के 83वें जन्मदिन एवं विश्वशांति दिवस के अवसर पर संकल्प सभा का आयोजन "हिन्दू–मुस्लिम एकता भवन" तकियापुर, दानापुर, पटना, बिहार में आयोजित किया गया। सभा की अध्यक्षता जवान मजदूर किसान पार्टी के श्री राज नारायण अकेला ने की।

इस संकल्प सभा का संचालन करते हुए बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री रामानन्द प्रसाद जी ने कहा कि दुनिया में करोड़ों अरबों लोग जन्म लेते है और फिर मृत्यु को प्राप्त करते है। उनमें कितने लोगों की जयंती मनाई जाती है। अग्निवेश की जयंती क्यों मना रहे हैं। कुछ बात अन्य लोगों से अलग हटकर इनमें है तभी हमलोग इनकी जयंती मना रहे हैं। फिर आज विश्व शांति दिवस भी मना रहे हैं। पूरी दुनिया में विश्व शांति के लिए कामना की जा रही है। विश्व शांति से अग्निवेश जी का क्रिया कलाप जुड़ा रहा है। विश्व शांति की कामना करने का मतलब ही है कि दुनिया में अशांति है। अशांति इसलिए है कि प्रकृति के संसाधनों का समाज में समान वितरण नहीं है। कुछ लोगों ने संसाधनों पर अपना आधिपत्य जमा रखा है और अधिकांश लोग संसाधनों के अभाव में फटेहाल जिंदगी जी रहे हैं। इसलिए अशांति है। "जब तक भूखा इंसान रहेगा, धरती पर तूफान रहेगा"।

स्वामी जी इन्हीं शोषित, वंचित, अभाव ग्रस्त लोगों की लड़ाई लड़ते रहे और उन्हें उनका हक दिलाने के लिए संघर्ष करते हुए अपने को बलिदान कर दिया। आज हम लोग संकल्प लें कि अंधविश्वास, गुरूडम, रूढ़िवादिता को त्याग कर, जातीयता, सांप्रदायिकता एवं गैरबराबरी के खिलाफ आवाज बुलंद करेंगे।

सभा को संबोधित करते हुए गांधीवादी नेता श्री मनोहर मानव जी ने कहा कि स्वामी जी को मुझे बहुत करीब से देखने समझने का मौका मिला है। स्वामी जी पूरी दुनिया में घूम–घूम कर मानवता एवं दबे कुचले लोगों की लड़ाई लड़ते रहे हैं। महिलाओं के हक एवं गैर–बराबरी की लड़ाई लड़ते रहे। सती प्रथा एवं बंधुआ मजदूरों के हक की लड़ाई के लिए स्वामी जी को लोग युगों–युगों तक याद करते रहेंगे।

बाढ़ सुखाड़ कटाव पीड़ित मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राम भजन सिंह यादव ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी को सिर्फ आर्य समाजी के रूप में याद करना बेमानी होगा। स्वामी जी मानवता की लड़ाई लड़ने के लिए ऐशो आराम एवं प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर आम लोगों के हक की लड़ाई लड़कर उन्हें उनका हक दिलवाना और समाज की सेवा करना ही अपना परम कर्त्तव्य समझते थे।

इनके अतिरिक्त आर्य समाज आरा के प्रधान श्री अवध बिहारी मेहता, उप मंत्री प्रकाश रंजन, आर्य समाज ब्यापुर के प्रधान श्री अरूण आर्य, मंत्री श्री लालदेव आर्य, पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री अजय कुमार सिंह, अधिवक्ता श्री सुनील कुमार यादव, श्री प्रभु दयाल, बहन मिथिलेश देवी, श्री प्रमोद शास्त्री, मौलवी हसन, मो. मकसूद, मो. सरफराज, मो. रसीद आदि ने भी अपने–अपने विचार रखे।

– रामानन्द प्रसाद, उप प्रधान, बिहार
राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

शिक्षाविद आशानन्द शास्त्री का 120वाँ जन्मोत्सव सम्पन्न

जीवित माता–पिता की सेवा तथा सम्मान ही सच्चा श्राद्ध

–स्वामी आर्यवेश

आशानन्द जी ने यज्ञ, संस्कृत, शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया

–अनिल आर्य

रोहतक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 16 सितम्बर, 2021 (गुरुवार) को आर्य प्रचारक श्री आशानन्द शास्त्री जी का 120वाँ जन्मोत्सव ऑनलाइन आयोजित किया गया जो उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य वक्ता के रूप में उद्बोधन देते हुए कहा कि जीवित माता–पिता की सेवा, सम्मान, आज्ञा पालन तथा उनकी अच्छे तरीके से दखे–रेख करना ही सच्चा श्राद्ध है। स्वामी जी ने बताया कि आज का युवा पश्चिमी सभ्यता में लीन होता जा रहा है। आधुनिक चकाचौंध की दौड़ में अन्धा हो चुका है। अमीर होने की दौड़ में अपने कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। पाश्चात्य सभ्यता का असर इतना ज्यादा बढ़ता जा रहा है कि संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। आज के बच्चे दादा–दादी, नाना–नानी तथा परिवार के बड़े–बुजुर्गों के संरक्षण एवं लाड–प्यार से वंचित होते जा रहे हैं जिस कारण से संस्कारों का अभाव बढ़ता ही जा रहा है। आज महती आवश्यकता है कि बच्चों को संस्कारित किया जाये जिससे वे अपने बुजुर्गों की सेवा तथा उनकी आज्ञा पालन कर सकें। माता–पिता तथा बुजुर्गों का सम्मान उनके जीवित रहने पर ही करने का लाभ है। आज परिवारों को एकत्रित करने की आवश्यकता है, टूटते परिवार चिंता का विषय हैं। अनेक परिवारों में माता–पिता को दुत्कारा जा रहा है, उन्हें जीवन यापन के लिए कोर्ट की शरण में जाना पड़ रहा है। ऐसे समय में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को समाज में जीवन मूल्यों को स्थापित करने के लिए जगह–जगह प्रेरणादाई कार्यक्रम आयोजित करके कठिन परिश्रम करने होंगे जिससे माता–पिता व गुरुओं का सम्मान हो। यदि ऐसा करने में हम सब सफल हो पाते हैं तो यही आशानन्द शास्त्री जी को सही मायनों में श्रद्धांजलि होगी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि हमारे बुजुर्ग परिवार एवं समाज की नींव का कार्य करते हैं। उनके आशीर्वाद से सारे कार्य सुगमता पूर्वक सफल होते हैं। हमारी पुरातन संस्कृति संयुक्त परिवार की रही है जिससे एक–दूसरे का सम्मान बना रहता था। परन्तु परिवारों में विभाजन होने से माँ और पिता को अपने पास कौन रखे यह एक प्रश्न खड़ा होता जा रहा है जो सभ्य समाज पर कलंक है।

मुख्य अतिथि श्री बोधराज सीकरी ने कहा कि शास्त्री जी का शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान रहा है। उनकी विरासत में निर्धन व पिछड़े वर्ग में शिक्षा की निष्काम सेवा की आवश्यकता है। राष्ट्रीय मंत्री श्री प्रवीण आर्य ने कहा कि हम माता–पिता का ऋण कभी नहीं चुका सकते। आर्य नेता पुष्पा शास्त्री व श्री सुरेन्द्र शास्त्री ने आभार व्यक्त किया। इनके अतिरिक्त साहित्यकार श्री ओम सपरा, विमलेश बंसल, राजेश मेहंदीरत्ता, रमेश गाडी, आचार्य मेघश्याम वेदालंकार, वंदना सचदेवा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अन्त में गायिका रजनी चुघ, प्रव ठक्कर, प्रवीन आर्या, रजनी गर्ग, सुदेश आर्या, रेखा गौतम, आशा आर्या, रवीन्द्र गुप्ता आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किये।

पृष्ठ 3 का शेष

अग्नि विज्ञान– गुण एवं प्रभाव

सतह से ऊपर ज्वाला क्षेत्र में पहुँचते हैं, तैसे ही ज्वलन तापमान मिल जाने के कारण उपरोक्तानुसार ज्वालाओं के साथ जलने लगती है। जब लकड़ी के समस्त उड़नशील पदार्थ समाप्त हो जाते हैं, तब मात्र कोयले की अग्नि बगैर ज्वाला के जलती है। ऐसे ही तथ्य गूगल सर्च में, ज्वाला पर पढ़ा जा सकता है।

(ध) वाष्पन – किसी भी पदार्थ के वाष्पन में कोई रासायनिक क्रिया नहीं होती है। केवल अवस्था पतिवर्तन होता है यानी तरल एवं ठोस अवस्था से पदार्थ परिवर्तित होकर गैस यानी वायुरुप में हो जाते हैं। इस वाष्पन क्रिया में हवा के आक्सीजन गैस की खपत नही होती है। वायु प्रदूषित नहीं होती है। इस अवस्था परिवर्तन के लिए केवल उष्मा यानी गर्मी ही चाहिए। जब तक गर्मी मिलती है तभी तक वाष्पन होता है। जिस तापमान पर कोई पदार्थ ठोस या तरल अवस्था से वाष्प यानी भाप यानी गैस अवस्था, रुप मे परिवर्तित होती है, तो उस तापमान को उस पदार्थ का "वाष्पन तापमान" कहते हैं, जो प्रत्येक सामग्री की भिन्न भिन्न होती है तथा इस क्रिया को वाष्पन कहते हैं। अगर हमें जल को वाष्प यानी भाप में परिवर्तित करना है तो हमें, किसी उपयुक्त वर्तन में जल को रखकर किसी भी अग्नि पर रखकर गर्म कर उबालते हुए वाष्प यानी भाप में परिवर्तित कर सकते हैं। जल के वाष्प यानी भाप की शक्तियों का उपयोग कर, रेलगाड़ियों, मालगाड़ियों को चलाया जाता था। वर्तमान में भी बिजलीघरों में जमीन से निकली पत्थर के कोयला को जलाकर जल के वाष्प, भाप का उपयोग कर अधिकांश बिजली का उत्पादन होता है एवं अन्य कई कारखानों में जल के भाप से मशीनें चलाई जाती हैं। जब हमें किसी अग्नि को बुझाना होता है या आँच कम करना होता है तब हम उस पर जल की छीटें डालते हैं या फिर जल को डालते हैं, तब जल अग्नि की ऊष्मा लेकर वाश्प बन कर हवा में फैल जाता है और अग्नि की ऊष्मा एवं तापमान कम होकर बुझ जाता है या आँच कम हो जाता है। जल का वाष्पन 100 सेंटीग्रेड तथा पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल, तारपीन के तेल का वाष्पन तापमान 60 से 80 सेंटीग्रेड होता है। जब घर में भोजन पकवान आदि बनता है तब उनके उड़नशील घटक सामग्री गर्म होकर यानी वाष्प बन कर उनकी भिन्न भिन्न सुगन्ध हवा वातावरण में फैलने लगता है और हमें उन उन व्यंजनों, मसालों आदि की सुगंध नसिका से ग्रहण होती है एवं हम बगैर देखे पहचान जाते हैं कि क्या पक रहा है। यदि किसी कढ़ाई या तवा आदि में थोड़ा घृत रखकर गर्म किया जाये तब उसका तापमान "वाष्पन तापमान" से अधिक होने और "ज्वलन तापमान" से कम होने पर, वह वाष्प यानी धुंआ बनकर हवा में चारों ओर फैलेगा और उसकी सुगंध फैलेगी। यदि ताप यानी गर्मी बढ़ा कर उसका तापमान "ज्वलन तापमान" से ज्यादा कर दिया जाये तब वह ज्वालाओं के साथ जलने लगेगा और उसकी सुगंध पास वाले को भी नहीं मिलेगी।

इसी प्रकार हम यज्ञ के घृत एवं हव्य के रसायनों को किसी उपयुक्त वर्तन में रखकर किसी भी अग्नि पर रखकर गर्म करते हुए फैला सकते हैं एवं अग्निहोत्र यज्ञ के मात्र भौतिक लाभ ही पा सकते हैं। इसे हम कोयला या कंडा की मध्यम आँच की अग्नि में बहुत ही धीरे–धीरे डालते हुए भी फैला सकते हैं। यदि हम अग्नि में जल्दी–जल्दी, ज्यादा–ज्यादा सामग्रियां डालेगें तो अग्नि बुझ जायेगी। यज्ञ के समस्त लाभों को प्राप्त करने हेतु, इसे समस्त निर्धारित कर्मकांडो के साथ करना चाहिए।

जब जलती हुई दियासलाई को मोमबत्ती, मिट्टी के तेल के दिये, सरसों के तेल के दिये या घृत के दिये के बत्ती के पास ले जाते हैं, तैसे ही इसके लौ की गर्मी से, बत्ती के पास लगी तेल या घी तेजी से गर्म होने लगते हैं। वाष्पन तापमान और अविलम्ब ही ज्वलन तापमान तक गर्म होकर ज्वाला सहित जलने लगती है और शनैः–शनैः तब तक जलती रहती है, जब तक जलने वाला तेल या घी मिलता रहता है। इस एवं अन्य सभी जलने की प्रक्रिया में तेल घी के रसायन और हवा के आक्सीजन के बीच ज्वलन तापमान पर रासायनिक क्रिया होने लगती है जिसके कारण तेल घी व हवा का आक्सीजन धीरे–धीरे व्यय यानी खर्च होने लगता है और फलस्वरूप कार्बन डाइआक्साइड गैस, ताप यानी गर्मी व प्रकाश पैदा होने लगती है। इसी कारण इनके जलने के समय इनके रसायनों की सुगंध, दुर्गधं नहीं आती है परन्तु जैसे ही उनकी ज्वाला किसी कारण से बुझ जाती है या बुझाया जाता है, तब कुछ सेकेण्डों के लिये थोड़ा वाष्प धुआँ के रुप में हवा में मिश्रित होकर फैलता है और हमें नसिका से ग्रहण होकर उसके रसायनों की सुगंध या दुर्गधं का ज्ञान होता है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि ज्वाला बुझाते ही बहुत थोड़े रसायनों का तापमान उनके "वाष्पन तापमान" से ज्यादा होने से, थोड़ा रसायन वाष्पित होकर वायुमंडल में मिश्रित होकर फैल जाता है और अगल–बगल के लोगों को उनके रसायनों की सुगंध या दुर्गन्ध मिलती है। जब इन दियों को अथवा ज्वाला के साथ जलते हुए लकड़ी अथवा ज्वाला के साथ जलते हुए हवन सामग्री को जलने में आवश्यक मात्रा में हवा का आक्सीजन नहीं मिल पाने पर काला–काला धुँआ भी निकल उठता है जिसमें कार्बन यानी कोयला के बहुत बारीक कण होते हैं जिससे ज्वाला के पास ऊपर कोई बर्तन रखने पर उसके बाहरी सतह पर कार्बन कालिख ठंडा होकर जमा हो जाता है। हमारे लिए यह सोचने विचारने की बात है कि हम हवन में डाले जाने वाले पदार्थों जैसे घृत, केसर, अगर, तगर, चंदन, गुग्गुल, तिल, गिलोय, जायफल, छुहारा, इलाइची आदि के रसायनों को नसिका से कैसे और किस रुप में ग्रहण कर सकते हैं? उत्तर इन्हें भाप, वाष्प रुप में परिवर्तित कर हवा में मिश्रित कर नसिका से ग्रहण करना ही होगा तभी हमें इनके मूल सुगन्ध एवं अन्य सभी लाभ प्राप्त हो सकेंगे, जिसके लिए इन्हें मात्र वाष्पन तापमान तक किसी प्रकार से गर्म करना है।

जहाँ आप बैठते हों वहां पास में एक कपूर की टिकिया या छोटा सा टुकड़ा रख दें। आपको कुछ ही क्षणों में कपूर की भीनी–भीनी सुगन्ध आने लगेगी। आप इस प्रश्न का उत्तर सोचें कि कपूर की सुगन्ध कैसे नसिका से ग्रहण होती है? ऐसा इसलिये होता है क्योंकि कपूर, पेट्रोल, नेल पालिश रिमूवर, जल आदि पदार्थ सामान्य तापमान पर भी अत्यधिक अल्प मात्रा में वाष्प बन कर हवा में फैलते रहते हैं, जब तक वह किसी ढक्कन बंद डिब्बे में न हो। कुछ ही मिनटों में आप सभी सुगन्ध के अभ्यस्त हो जायेगें और सुगन्ध की अनुभूति धीरे–धीरे कम होती जायेगी परन्तु इसके समस्त लाभ प्राप्त होते रहेंगे। जब भी कोई नया व्यक्ति कमरे में प्रवेश करेगा तो उसे भी कपूर की भीनी–भीनी सुगन्ध की अनुभूति होगी। यदि आपके आस पास दुर्गन्धयुक्त पदार्थ जैसे मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीजल या सुलगता हुआ चमड़ा, रबड़, पलास्टिक रख दिया जाये तो आप कुछ मिनटों से ज्यादा दुर्गन्ध सहन नहीं कर पायेंगे और उसे अन्यत्र दूर हटा देंगे। जल भी सामान्य तापमान पर भी धीरे–धीरे वाष्प बन कर हवा में फैलते हैं जिससे ही गीले कपड़े हवा में फैलाने से सूखते हैं। जब कोई सामग्री कोयले की आग में बगैर लौ के जलती है, तब सबसे पहले उस सामग्री में मौजूद तेल, उड़नशील पदार्थ गर्म होते ही, वाष्प के रुप में हवा में उड़ने फैलने लगते हैं तथा इसके बाद ही, बचा हुआ पदार्थ यानी कोयला यानी कार्बन ही ज्वालारहित अग्नि की तरह जलता है।

यज्ञ के यज्ञाहुतियों की रसायनें सामान्य तापमान पर वाष्प नहीं बना पाते हैं अतः इन्हे वाष्प बनाने के लिये ऊष्मा यानी गर्मी चाहिये जिसके लिये ही ज्वालारहित यानी कोयले, कंडे की अग्नि ही चाहिये। जब वाष्पयुक्त यज्ञ में घृत एवं हव्य से मिश्रित यज्ञाहुतियों को "ज्वालारहित अग्नि" यानी कोयले की आग पर डाला जाता है, तब इस सामग्री के सबसे निचले तह की सामग्री का तापमान, नीचे की अग्नि की गर्मी से तेजी से बढ़ने लगती है। जब इसका तापमान उस सामग्री में स्थित उड़नशील रसायनों के वाष्पन तापमान से ज्यादा होता है, तैसे ही वह रसायन वाष्पित होकर वाष्प बनकर सघन होने तक धुआँ के रुप में दिखाई देता है लेकिन हवा में दूर–दूर फैलते ही वह आँखों से दिखाई देना बंद हो जाते हैं। जब इस निचले तह के समस्त रसायन वाष्पित होकर उड़ जाते है, तब मात्र कोयला बच जाता है। अब यह कोयला भी और ज्यादा गर्म होने पर यानी ज्वलन तापमान से ज्यादा तापमान होने पर बगैर ज्वाला के लाल रंग के अग्नि के रुप में जलने लगता है, जिससे बहुत कम कार्बन डाइआक्साइड गैस बनती है। इस लाल अग्नि के ताप यानी गर्मी से ऊपर वाली यज्ञाहुतियों का तह गर्म होने लगेगा और उपरोक्तानुसार उड़नशील पदार्थ गर्म होकर हवा में उड़ कर फैल जाते हैं तब अवशेष बचा कार्बन कोयला जलने लगेगा। इसी प्रकार शनैः–शनैः निचले तह के जलने से कार्बन डाईआक्साइड गैस, थोड़ा सा राख और गर्मी यानी ताप पैदा होता और इस गर्मी से ऊपर की तह अत्यधिक गर्म होने से वाष्पित होने वाला पदार्थ, वाष्पित होकर हवा में उड़ कर फैल जायेगा और फिर जलने लगेगा और अंत में पूरी सामग्री समाप्त हो जाती है और अन्त में मात्र थोड़ा सा राख बचेगा। "ज्वालारहित यज्ञ" में ऐसा ही होता है। इस प्रकार के हवन यज्ञ से विशेष कर बृहद यज्ञ से हव्य कई घंटों तक धूप बत्ती, अगर बत्ती की तरह सुलगता रहता है, जिससे वातावरण हवा में कई घंटो तक सुगंध फैलता रहता है। इसी प्रकार के यज्ञ से समस्त प्राणीजनों को लाभदायक रसायनें नसिका द्वारा ग्रहण होकर लाभदायक होती हैं। इस प्रकार के यज्ञ से उड़नशील तैलीय पदार्थों के हवा में उड़ जाने के बाद बचा पदार्थ मात्र अवशेष कार्बन कोयला के जलने से ही अल्प मात्रा में कार्बन डाईआक्साइड बनता है जबकि दूसरे तरह के "ज्वालायुक्त यज्ञ" में यज्ञ के प्रचलित पद्धति में पूरा का पूरा यानी शत प्रतिशत सामग्री ज्वालाओं के साथ जलने से शत प्रतिशत कार्बन डाइआक्साइड गैस आदि ही बनता है जो केवल हानिकारक, वातावरण को प्रदूषित करने वाला होता है।

यह विचारें कि गीली लकड़ी क्यों नहीं तेजी से जलती है जैसे सूखी लकड़ी जलती है। गीली लकड़ी में कुछ भाग जल के रुप में विद्यमान होता है, जो ज्वलनशील नहीं होती है। जब इसे जलाने का प्रयास किया जाता है तब यह जल अत्यधिक गर्मी स्वयं ले लेता है। इससे सम्पूर्ण लकड़ी का तापमान लगभग 200–300 डिग्री सेंटीग्रेड से ज्यादा बढ़ ही नही पाता, जब तक सॅपूर्ण जल भाप बन कर हवा में उड़ नही जाता है, तब तक लकड़ी सुलग सुलग कर जलती है। जब लकड़ी पूरा सूख जाती है तब वह भली प्रकार से ज्वालाओं के साथ जलती है।

(प) दहन एवं वाष्पन में अतंर – किसी भी ज्वलनशील सामग्री के वाष्पन एवं ज्वलन यानी जलने में बहुत अन्तर होता है जो निम्न है।

(1) वाष्पन के लिए हवा नहीं चाहिए अतः हवा प्रदूषित नहीं होती है जबकि दहन के लिए हवा चाहिए ही, अन्यथा दहन नहीं हो सकता है, अतः हवा प्रदूषित होती है। बगैर वायु प्रदूषण के दहन हो ही नहीं सकता है।

(2) वाष्पन की क्रिया परिवर्तनीय होती है। यदि इन वाष्प को ठंडा कर दिया जाये तो मूल पदार्थों के रसायनों को पुनः ठोस या तरल रुप में वापस प्राप्त हो जाता है, और ऐसा बार–बार किया जा सकता है। ज्वलन यानी दहन की क्रिया अपरिवर्तनीय होती है। दहन होने के बाद मूल पदार्थों के रसायनों को पुनः ठोस या तरल रुप में वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता है। जब किसी पदार्थ के मूल स्वरुप को नष्ट करना होता है तब उसे ज्वालाओं के साथ दहन कर देते हैं।

(3) वाष्पन के लिए निम्न या मध्यम आँच यानी तापमान की अग्नि चाहिए जो कोयले, कंडे यानी उपले की अग्नि होती है, दहन के लिए उच्च आँच यानी उच्च तापमान की अग्नि चाहिए।

(4) वाष्पन के फलस्वरुप जो–जो रसायनें हवा में फैलती हैं उनमें मूल पदार्थों के सुगंध, औषधीय आदि सभी गुण यथावत ही रहते हैं। उनके रसायनों एवं गुणों में कुछ भी परिवर्तन नहीं होता है। ज्वलन यानी दहन में पदार्थ के समस्त रसायनें विलुप्त, समाप्त, परिवर्तित होकर 3 भागों में बंट कर (1) अधिकांश रंगहीन, गंधहीन गैसें आदि जिसमें मुख्यतयः कार्बन डाइआक्साइड गैस होती हैं। (2) उर्जा, गर्मी जो लपलपाती हुई प्रकाशयुक्त ज्वालाएं होती हैं और बगैर प्रकाश के भी हो सकती हैं। (3) जल वाष्प के रुप में ही हवा में फैलती है।

(5) पदार्थों के ज्वलन, दहन क्रिया एवं जीवधारियों, प्राणियों के श्वसन क्रिया में पूर्ण समानता है जबकि वाष्पन की क्रिया में बिल्कुल समानता नहीं है। दहन एवं प्राणियों के श्वसन क्रिया में इसलिए समानता है क्योंकि दोनों में हवा के आक्सीजन गैस की खपत होती है और प्रतिफल में दोनों से हवा को प्रदूषित करने वाली कार्बन डाईआक्साइड गैस आदि ही हवा में फैलती है।

(6) दैनिक जीवन में दहन क्रियाओं को केवल उर्जा, गर्मी, प्रकाश, यांत्रिकी, भोजन पकाने आदि के लिए कराया जाता है जबकि वाष्पन पदार्थों के सुगंध, रसायनों को वायुरुप में परिवर्तित कर हवा में फैलाने को किया जाता है, जैसे मच्छर क्वायल, तरल रसायनों, अगरबत्ती, घूपबत्ती, फूलों के सेंट, इत्र बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। रोगों के निवारण करने के लिए, धूनी यानी वाष्प चिकित्सा किया जाता है।

3. प्रत्यक्ष में विभिन्न अग्नियों के गुण एवं उपयोग – उपरोक्तानुसार अग्नियाँ 7 तरह की होती हैं परन्तु हम अपने दैनिक कार्यों में प्रायः दो ही तरह के अग्नियों का उपयोग करते हैं।

3.1 पहली "ज्वालायुक्त अग्नि" जिसमें उपरोक्त 7 रगों अथवा कुछ रगों की ज्वालाएं यानी लौ हवा में उठते रहते हैं। यह अग्नि उच्च तापमान यानी अत्यधिक आँच की उग्र, प्रचंड, विध्वसंक, दहन करने वाली होती है। इस "ज्वालायुक्त अग्नि" का अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि इस अग्नि में कोई भी सुगन्धित, दुर्गन्धित, तीक्ष्ण, मिष्ठ, लाल मिर्च, कोई भी कपड़ा, जड़ी बूटियाँ, जहर, अमृत आदि कुछ भी ज्वलनशील पदार्थ अर्थात कुछ भी डालो, यह सब को छिन्न भिन्न, समस्त गुणों, शक्तियों का विध्वंश कर यानी समस्त गुणों को समाप्त कर केवल रंगहीन, गंधहीन गैसें, ऊष्मा और थोड़ा जल वाष्प के रुप में परिवर्तित कर देती है।

3.2 दूसरी अग्नि "ज्वालरहित अग्नि" मध्यम एवं निम्न तापमान यानी आँच की शांत अग्नि होती है जो बगैर ज्वालाओं के साथ जलती है, जैसे कोयला, कंडा की अग्नि, जिसमें ज्वाला बिल्कुल हवा में नही उठती है। इस अग्नि में डाले गये पदार्थों के रसायनों का दहन नहीं होता है, बल्कि मात्र गर्म होकर उनके भाप यानी वाष्प वायुरुप में रुपातंरित होकर समस्त मूल गुण एवं शक्तियाँ हजारों गुना बढ़कर हवा में फैलने लगते हैं। जो हमें सघन होने पर कुछ ही उँचाई, कुछ ही दूरी तक धुआँ के रुप में आँखो से दिखाई पड़ते हैं। हवा में विलीन होते ही आँखो से नहीं दिखाई देते जैसे जल में शक्कर डालने एवं चम्मच से चलाने पर शक्कर जल में धीरे–धीरे विलीन हो जाता है। इस अग्नि में यह विशेषता होती है कि जो जैसा पदार्थ डालते हैं वह गर्म होकर मूल रसायनों के मूल गुणों के साथ ही हवा में फैलता है परन्तु शक्तियाँ हजारों लाखों गुना बढ़ जाती हैं। लाल मिर्च डालो तो इसी की तीक्ष्णता हजारों गुना बढ़कर ही हवा में फैलता है। शुद्ध घृत डालो तो इसी की सुगन्ध हजारों गुना बढ़कर हवा में फैलेगी। इस अग्नि में कोई भी सुगंधित, दुर्गन्धित, तीक्ष्ण, मिष्ठ, लालमिर्च, कोई भी कपड़ा, जड़ी बूटियाँ, जहर, अमृत आदि कुछ भी पदार्थ अर्थात कुछ भी डालो, तो उन्हीं मूल गुणों के साथ हजारों गुना बढ़कर ही हवा में फैलती है। यदि भोजन को उपयुक्त और निम्नतम आँच की अग्नि में और अधिक समय में पकाया जाए तो उसकी पौष्टिकता एवं स्वाद अत्यधिक होती है।

शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 6 का शेष

अग्नि विज्ञान– गुण एवं प्रभाव

इसी कारण प्राचीनकाल में भोजन को कंडे की अग्नि पर कम से कम आँच में पकाया जाता था। दूध को पूरे दिन यानी चौबीसों घंटे या और अधिक समय गर्म रखा जाता था जिससे वह फट न सके एवं उसका स्वाद बढ़ता ही जाये। ऐसे दूध से बने दही एवं मट्ठे के स्वाद का क्या है कहना। वर्तमान में यदि भोजन को "सोलर कुकर" यानी सूर्य के एकत्रित किरणों की गर्मी से अथवा "सोलर कम इलेक्ट्रिक कुकर" जो बिजली से भी चलती है, में पकाया जाये, जो मई, जून में 4 से 5 घंटे एवं अन्य महीनों में 5 से 8 घंटे में पकता है। यह अत्यधिक स्वादिष्ट एवं पौष्टिक होता है साथ ही बहुत ही कम व्यय लगता है।

3.3 दिन प्रतिदिन के जीवन में अग्नियों का उपयोग :– सृष्टि के प्रारम्भ से हम समस्त मनुष्यगण अपने दैनिक जीवन में विभिन्न रुपों एंव तीव्रता यानी ऊष्णता की अग्नियों का उपयोग करते रहे हैं जिनके उदाहरण निम्न है :–

(अ) घर आदि में मक्खी मच्छरों को भगाने एवं दूर रखने को विभिन्न क्वायलों को सुलगाकर धुआँ करते हैं। हवा में सुगंधियों को फैलाने के लिए अगरबत्ती, धूपबत्ती आदि सुलगाते हैं। जब जानवरों के कमरे में बहुत मक्खी मच्छर हो जाते हैं तब नीम आदि के सूखे पत्तों को कोयला या कंडा अग्नि में डाल कर धुआँ करते हैं।

(ब) आज से 50–60 वर्ष पूर्व जब भारत के अधिकांश नगरों और गांवो में बिजली और रसोई घर के गैस के सिलेंडर की आपूर्ति नहीं थी। उस समय प्रकाश के लिए घरों आदि में लालटेन, पेट्रोमैक्स, ढ़िबरी, दियों में मिट्टी का तेल जलाया जाता था। भोजन पकाने के लिए घरों में लकड़ी के चूल्हे जलाए जाते थे। अब अधिकांश पॉवर हाऊसों में भूमि से निकला हुआ कोयला जिसे पत्थर का कोयला कहते हैं, को जला कर, जल को गर्म कर भाप बनाकर, डायनमों मशीनों को चला कर बिजली बनाई जाती है जिसे तारों द्वारा घरों आदि में आपूर्ति कर बल्ब, ट्यूबलाइट आदि को जलाकर प्रकाश किया जाता है। हीटर आदि से भोजन पकाया जाता है। ऐसे ही बिजली से कई–कई कार्य सम्पन्न किए जाते हैं।

आप यह ध्यान दीजिए कि एक सामान्य रोटी बनाने के लिए लोगों को किन–किन सावधानियों का पालन एवं ध्यान करना पड़ता है। सबसे पहले गेहूं ठीक एवं सूखा होना चाहिए। सड़ा हुआ, मिट्टी, गंदगी आदि मिला हुआ न हो। जब गेहूं ठीक हो तभी उसको चक्की में इस तरह से पीसने में ध्यान दिया जाता है कि वह बहुत बारीक न हो और न बहुत मोटा हो। अब इसके बाद में उसका आंटा बनाने में जल न अधिक हो, और न कम हो। उसको समुचित समय के लिए गूंथा जाए जिससे आंटा से उपयुक्त बढ़िया स्वादिष्ट रोटियां बने। अब इसके बाद में तवा न बहुत भारी हो और न बहुत हल्का हो। अब बेलने में रोटी इस प्रकार बेला जाए कि उसकी गोलाई एवं मोटाई निर्धारित होनी चाहिए। फिर उसको पकाने में कितना ध्यान दिया जाता है। अग्नि की आंच पकाने व सेंकने में भी अलग–अलग होती है, न बहुत ज्यादा हो और न बहुत कम हो। तब जाकर एक अच्छी रोटी खाने को मिलती है। इसके एक भी कड़ी में कहीं चूक हो जाए तो कल्पना करें कि वह रोटी कैसे बनेगी, खाने वाले को स्वादिष्ट लगेगी या नहीं। ऐसे ही विभिन्न व्यंजनो को पकाने, बनाने जैसे चावल, दाल, बघार, मसालों को भूनने, दूध उबालने आदि–आदि में विभिन्न ऊष्णता यानी तापमान की अग्नियों का निर्धारित समय के लिए उपयोग करते हैं जो व्यंजन पकाने वाले को अपने अनुभव से ज्ञान होता है।

हम अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों के अनुभव से यह जानते हैं कि किस कार्य विशेषकर रसोईघर मे व्यंजनो के बनाने के लिए कितनी अग्नि और किस रूप यानी कितने तापमान की अग्नि चाहिए। यदि अग्नि कम हो जाए या ज्यादा हो जाए तो हमारा कार्य समुचित रूप से संपन्न नहीं होगा। उदाहरण में यदि घर में 3 लीटर के प्रेशर कुकर है तो उसको गैस के सबसे छोटे बर्नर के अधिकतम ज्वाला पर यानी अधिकतम आंच पर रखते हैं। जैसे ही सीटी बजती है तैसे ही बर्नर की ज्वाला यानी लौ को सबसे कम कर यानी आंच को न्यूनतम पर कर देते हैं। फिर वह निर्धारित समय तक यथावत रखना होता है जिससे व्यंजन ठीक से पक जाये। यदि ज्यादा लोगों के लिए भोजन बनाना होता है तब हम बड़ा प्रेशर कुकर 5 लीटर का लेते हैं और उसको चूल्हे के सबसे बड़े बर्नर पर रखते हैं। उसे भी सीटी बजते ही आंच को न्यूनतम कर देते हैं, अन्यथा बहुत जल्दी–जल्दी सीटी बजेगा और उसमें गैस की बर्बादी होगी। इसी प्रकार अन्य व्यंजनों को बनाने में उचित बर्नर और उचित आंच आवश्यक है और उसका भी उपयोग निर्धारित समय के लिए करना होता है। जिसको हम अपने अनुभव से अथवा किसी पुस्तक या अन्य माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। सर्राफ जानते हैं कि किस गहने के किस भाग के बनाने व उनको जोड़ने के लिए किस प्रकार की, कितनी आंच कितने समय के लिए देना है।

इस प्रकार हमें अग्नि की व्यापकता एवं उपयोगिता का स्मरण और ध्यान कर जीवन में उपयोग करना है जिससे वांक्षित भौतिक एवं आध्यात्मिक लाभ ही लाभ हो और किसी को किसी प्रकार की हानि न हो। यह पूजनीय, अलौकिक, रहस्यमयी, दिव्य देवी, कल्पनीय नही हो सकती है एवं ऐसा नहीं मानना चाहिए।

अतः विद्वानों से निवेदन है कि इस लेखनी पर अपनी शंका राय, टिप्पणी अथवा जो–जो त्रुटियाँ ज्ञान में आये, उसे अवश्य ही पत्र, ईमेंल, मोबाइल/व्हाट्सअप मैसेज आदि से लिखने का कष्ट करें जिससे मैं इस लेखनी को अधिक जन उपयोगी बना सकूं और मैं उसका उत्तर, निराकरण भेजूंगा।

मो./व्हाट्सअप–9451734531
Email - vedpragupta@gmail.com

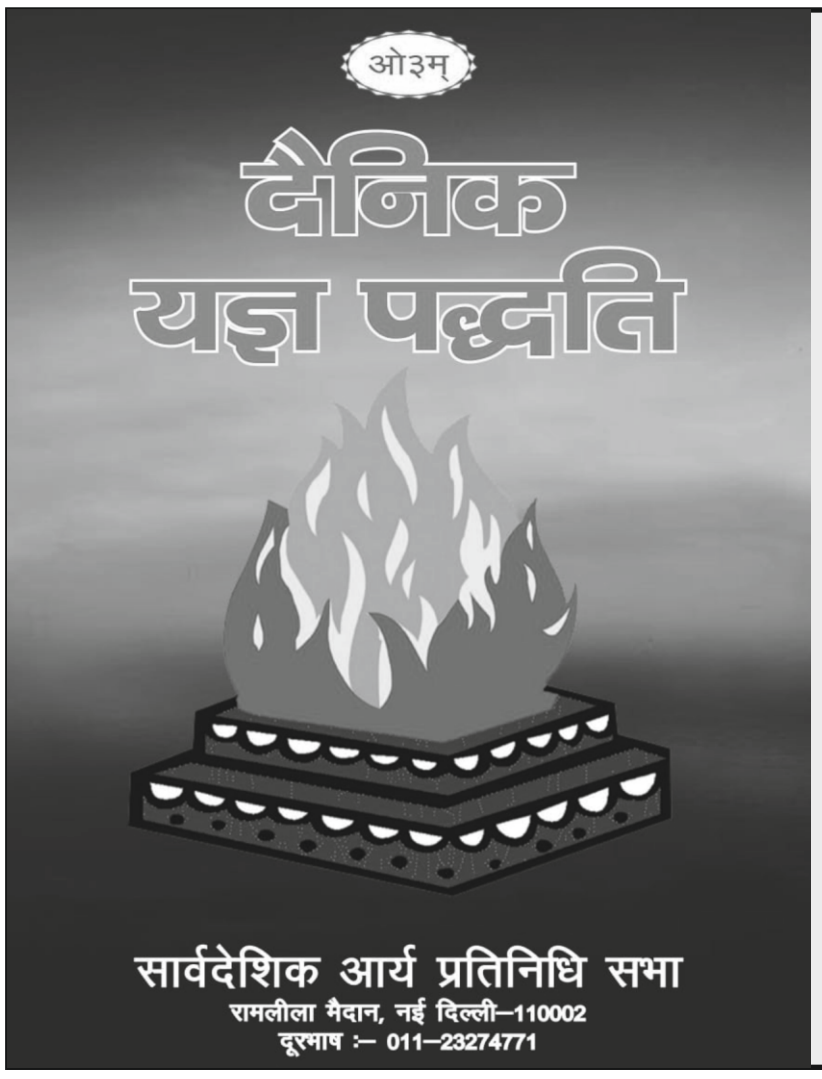

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771
मो.:–8218863689, 9013376851

ग्राम–रमाला, बागपत के सबसे बुजुर्ग व्यक्तित्व के धनी बाबा चौधरी भंवर सिंह आर्य जी का निधन

बाबा चौधरी भंवर सिंह जी आर्य का विगत दिनों निधन हो गया। वे ग्राम –रमाला, बागपत के सबसे बुजुर्ग आर्य महानुभाव थे। उन्होंने अपने जीवन में सादगी व सद्भाव को अपनाते हुए अपने प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया और महाभारत, रामायण, सत्यार्थ प्रकाश और लगभग सभी प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया और अध्ययन ही नहीं किया बल्कि उन्हें कई धर्मग्रन्थ कंठस्थ भी थे। उन्होंने अपने प्राचीन ग्रन्थों को केवल पढ़ा ही नहीं अपितु अपने जीवन में उन्हें धारण करने का भरसक प्रयास किया था अन्यों को भी प्रेरित करते थे कि धर्म के रास्ते पर ही चलकर अपना जीवन सफल बनाना चाहिए।

बाबा चौधरी भंवर सिंह जी ने अपना पूरा जीवन प्रभु की भक्ति में लगाया। वे कहा करते थे कि हमें दूसरों की बुराई नहीं करनी चाहिए क्योंकि दूसरों की बुराई करने से वह अपने मत्थे ही मढ़ जाती है। उन्होंने जीवन में क्षमा करने को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। वे ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी थे उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाये कम ही रहेगी। ऐसी महान विभूति को सार्वदेशिक सभा की ओर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा अपने चरणों में स्थान दें।

ऋषिपाल शास्त्री जी के बड़े भाई श्री सालिक राम जी का असमय निधन

आर्य समाज नवी करीम, दिल्ली के पुरोहित तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ऋषिपाल शास्त्री जी के बड़े भाई श्री सालिक राम जी का 11 सितम्बर, 2021 को 63 वर्ष की आयु में असमय निधन हो गया। वे बहुत ही सुलझे, सभ्य एवं मिलनसार व्यक्तित्व थे। वे अपने पीछे एक सुयोग्य विवाहित सुपुत्र तथा परिवार छोड़ गये हैं। उनके निधन से परिवार में जो रिक्तता आई है उसे भर पाना नामुकिन है। किसी भी परिवार में पिता का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। उनके निधन से परविार एवं समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है, परन्तु परमात्मा द्वारा लिये गये निर्णय को हम सबको न चाहते हुए भी सहन ही करना पड़ता है। उनके निधन से सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शोकाकुल हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परिवार के मुखिया के चले जाने से परिवार के ऊपर जो संकट आया है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का 83वाँ जन्मदिवस संकल्प समारोह के रूप में सम्पन्न

शोषित, पीड़ित, निर्बल और सताये हुए व्यक्ति के लिए हमेशा आवाज़ उठाते रहे और इस प्रकार के कार्य करने के कारण उन पर कई बार कातिलाना हमले भी हुए, परन्तु स्वामी जी अपने कर्त्तव्य पथ से कभी विचलित नहीं हुए और अन्तिम श्वांस तक संघर्ष करते रहे।

वर्ष 2019 में झारखण्ड में भू–माफियाओं के विरुद्ध आदिवासियों की एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करने के लिए स्वामी अग्निवेश जी को आमंत्रित किया गया किन्तु पाकुड़ नामक कस्बे में उनके ऊपर एक संकीर्ण मानसिकता के लोगों द्वारा जानलेवा हमला किया गया। पूरी भीड़ उनके ऊपर टूट पड़ी और वे गम्भीर रूप से घायल भी हो गये। लेकिन किसी तरह वहां से स्वामी जी जीवित वापिस लौट आये। ऐसी न जाने कितनी घटनाएं स्वामी जी के जीवन से जुड़ी हुई हैं। विद्रोह, संघर्ष और सामना करना उनके स्वाभाविक गुण थे और इनसे वे कभी पीछे नहीं हटते थे। परन्तु 80 वर्ष की उम्र में जिस तरह से स्वामी जी के ऊपर साम्प्रदायिक संगठन ने हमला कराया और उस हमले में लगी गम्भीर चोट के कारण अन्ततोगत्वा 11 सितम्बर, 2020 को उन्होंने नश्वर शरीर को छोड़कर महाप्रयाण किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज हम उनका 83वाँ जन्मदिन मनाने के लिए इस संकल्प समारोह में एकत्रित हुए हैं। हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में कार्य करने की आवश्यकता है जिससे समाज में दबे, कुचले, शोषित व पीड़ित के हक की लड़ाई लड़ी जा सकें तथा समाज में फैले अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नारी उत्पीड़न, शोषण, चरित्रहीनता तथा अन्य सामाजिक बुराईयों के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द की जा सकें। यदि हम सब ये कार्य करने में सफल होते हैं तो उनके प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

संकल्प समारोह में मुख्यअतिथि के रूप में हैदराबाद से पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपने सम्बोधन में बताया कि स्वामी अग्निवेश जी हमेशा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के नारे को सार्थक करने की अपील किया करते थे। उनका मानना था कि हजारों वर्ष पहले हमारे वैदिक ऋषियों ने वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा घोषित की है जिसके अनुसार संसार में सभी जीव–जन्तु, पशु–पक्षी तथा मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य हैं। उनके द्वारा बताया गया वसुधैव कुटुम्बकम् का यह सिद्धान्त एक–दूसरे के परस्पर जुड़ाव एवं परस्पर निर्भरता के माध्यम से चरितार्थ हो सकता है। वर्तमान में जब चारों ओर अन्धकार और निराशा का माहौल समाज में बना हुआ है और समाज को विभाजित करने का षड्यन्त्र विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है तथा धार्मिक, सामाजिक संस्थाएं सकारात्मक निर्माणकारी भूमिका न निभा रही हों तो यह और अधिक आवश्यक हो जाता है कि हम पुनः एक ईश्वर, एक ही है मानव परिवार, उसका एक हो संविधान तथा एक हो विश्व सरकार यह स्वप्न था स्वामी अग्निवेश जी का। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और इसको साकार करने का कार्य विश्व स्तर पर जोर–शोर से प्रारम्भ करने का निर्देश स्वामी जी दिया करते थे। स्वामी जी ने कटुता, नफरत और घृणा के स्थान पर पूरे विश्व में शांति, सौहार्द एवं समानता का संदेश दिया और इन्हीं आदर्शों से सुसज्जित समाज बनाने का संकल्प आज हम सबको लेना चाहिए। उनके जीवन कार्यों से प्रेरणा लेकर यदि हम अपने कर्त्तव्य पथ पर चलते हैं तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी ने कहा कि हरियाणा के शराबबंदी आंदोलन में स्वामी अग्निवेश जी का बहुत बड़ा योगदान रहा। स्वामी जी एक आन्दोलन पुरुष थे।

सर्वधर्म संवाद के संचालक एवं स्वामी अग्निवेश जी के विशेष सहयोगी देश–विदेश में उनके साथ अपना पूरा समय देने वाले युवा मनु सिंह ने स्वामी अग्निवेश जी को स्मरण करते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी का सबसे प्रभावशाली पक्ष उनका सत्य के प्रति आग्रह था। उनको जो बात सत्य और सही लगती थी उसके लिए वे न केवल आवाज बुलन्द करते थे बल्कि अपने प्राणों की बाजी लगाने के लिए भी सदैव तत्पर रहते थे। स्वामी जी ने पूरे विश्व में शाकाहार को प्रचारित और प्रसारित करने में ऐतिहासिक कार्य किया। उनकी प्रेरणा से दुनिया के बड़े–बड़े धर्माचार्यों एवं नेताओं ने मांस खाना छोड़ा और अहिंसा के सही मर्म को समझा। मैंने जितना स्वामी जी के नजदीक रहकर देखा आज मैं यह कह सकता हूँ कि उनका व्यक्तित्व विलक्षण था और निर्भीकता एवं स्पष्टवादिता उनके व्यक्तित्व के विशेष गुण थे। आज हमें उनके जीवन से यही प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम सत्य के लिए, न्याय के लिए और समानता के लिए प्राण–पण से संघर्ष करें।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के पूर्व कोषाध्यक्ष तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने स्वामी जी को एक क्रांतिकारी संन्यासी बताया। जिन्होंने हर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया। देश में जहाँ भी गरीबों, निर्बलों के ऊपर अत्याचार एवं अन्याय को देखा वहीं पर स्वामी जी ने मोर्चा लगाया और सफलता प्राप्त की। उन्होंने 1 लाख 75 हजार बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराकर पूरे विश्व के इतिहास में एक कीर्तिमान स्थापित किया।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा राजस्थान के अध्यक्ष श्री राजेश याज्ञिक ने स्वामी अग्निवेश जी को अपना प्रेरणास्रोत बताया और विद्यार्थीकाल से ही उनके सान्निध्य में आकर उन्होंने बंधुआ मुक्ति मोर्चा में कार्य किया। स्वामी जी जात, पांत, मजहब, सम्प्रदाय, स्त्री–पुरुष, गरीब–अमीर आदि के भेदभाव को मनुष्यकृत मानते थे और वे सदैव इन असमानताओं को मिटाकर वैदिक समाजवाद की विचारधारा के अनुरूप समतामूलक समाज की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहे।

इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने स्वामी अग्निवेश जी के संस्मरणों को संक्षिप्त में बताते हुए कहा कि स्वामी जी ने अपनी पहचान गरीबों, मजदूरों के उद्धार तथा कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज को बुलन्द करके बनाई। उन्होंने भारत ही नहीं अपितु कई अन्य देशों में अपने विचारों से लोगों को प्रभावित किया।

स्वामी अग्निवेश जी के कार्यों में विशेष सहयोगी साध्वी अग्नयानन्दी ने स्वामी जी को अपना प्रेरणा स्रोत बताया और उनके जीवन के अनेक महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने घोषणा की कि वे शीघ्र ही स्वामी जी के जीवनवृत्त को पुस्तक रूप में अपने प्रयत्न से प्रकाशित करेंगी।

बौद्ध भिक्षु आचार्य येशि फुंतशोक ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी साम्प्रदायिकता के विरोधी तथा शांति के पक्षधर थे। सभी सम्प्रदायों के बीच समन्वय कर विश्व स्तर पर शांति स्थापित करने और विश्व सरकार बनाने के हिमायती थे। स्वामी विजयवेश ने कहा कि बेटी बचाओ अभियान को आगे बढ़ाने में स्वामी अग्निवेश जी ने हमें साहस प्रदान किया।

इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री अजीत सिंह एडवोकेट झज्जर, जतनवीर राघव एडवोकेट खेड़ला, श्री राजेन्द्र सिंह यादव पार्षद, श्री आर. डी. यादव हिन्द मजदूर सभा व श्री हंसराज भारतीय आदि ने भी स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर श्री हंसराज भारतीय ने कविता पाठ करके स्वामी अग्निवेश को श्रधांजलि अर्पित की।

स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में उनकी प्रथम पुण्यतिथ 11 सितंबर, 2021 से 21 सितंबर, 2021 तक देश व विदेश में आयोजित अनेक कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज का जन्मोत्सव संकल्प समारोह बड़े उत्साह के वातावरण में बनाया गया। कार्यक्रम में बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कोषाध्यक्ष श्री विष्णुपाल, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के महामंत्री श्री ऋषिराज शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली के कार्यकारी प्रधान श्री रामपाल शास्त्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष ब्र. रामफल, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता श्री अशोक वशिष्ठ, श्री जावेद, श्री मकेन्द्र कुमार, श्री सोनू तोमर, श्री संतोष कुमार, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री धर्मेन्द्र आर्य, श्री अवनीश आर्य रठौड़ा, श्री बलजीत सिंह आदित्य, श्री दयानन्द आर्य अहीरका जीन्द, डॉ. रणवीर सिंह मलिक जीन्द, श्री बाबूलाल आर्य भिवानी, डॉ. धर्मवीर आर्य झज्जर, श्री सुरेन्द्र सिंह यादव व श्री सुन्दर यादव जैनाबाद रेवाड़ी, श्री रमेश आर्य संगठन मंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा, श्री इंदर सिंह आर्य सेवानिवृत्त एस.डी.एम. भिवानी, श्रीमती सुनीता खासा, कु. राजकुमारी आर्या, कु. पूजा आर्या, श्री राजवीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह, श्री अजय पाल आर्य, श्री जिले सिंह सैनी, श्री कृष्ण कुमार प्रजापति, पं. नरेश आर्य (सभी टिटौली) आदि के अतिरिक्त श्री मायाराम, श्री कैलाश, श्री किशोरीलाल, श्री अशोक कुमार, श्री कांशीराम, श्री रामशरण, श्री बाबूलाल आदि अपने सैकड़ों मजदूर साथियों के साथ पधारें जिनमें महिलाओं की संख्या सर्वाधिक थी। स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलि देने हेतु उनकी छोटी बहन श्रीमती कमला सिंह उनकी बेटी मोनिका भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम के व्यवस्था में जहाँ बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यालय के सभी कार्यकर्ताओं का विशेष प्रयत्न रहा वहीं स्वामी विजयवेश जी, पं. अश्विनी कुमार शर्मा जी व श्री हंसराज भारतीय जी का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर 85 मुक्त बंधुआ मजदूरों को कम्बल भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में सभी ने स्वामी अग्निवेश जी के वसुधैव कुटुम्बकम् के स्वप्न को साकार करने के लिए विशेष संकल्प लिया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।